मनुष्य बनो

शरणागति

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

क

याल फकीरचन्दजी महाराज

नवता मन्दिर होशियारपुर (पंजा

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पीं० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ७—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र. ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३१	माघ सं० २०३७ वि० फरवरी, १९८१	संख्या ४

। गुरु महिमा ।

गुरु महिमा अगम अपार, गुरु गति कौन कहे ॥ टेक ॥
बिन गुरु धर्म न कर्म कुछ, बिनगुरु भक्ति न ज्ञान ।
जनम जनम यम फाँस है, बिन गुरु नहीं निरवान ।
चरन धूल सिरधार, शुद्धिमति सोई लहे री ॥
देवा देवा ऋषि मुनी, सुर नर साध सुजान ।
हंस बंस अवतार सब, गुरु महिमा को जान ।
गुरु हैं सब करतार, बिन गुरु कौन रहे री ॥
राम कृष्ण के गुरु हैं, गुरु मत गुरु वशिष्ठ ।
सत्त कबीर ने गुरु किया, गुरु हैं सबके इष्ट ॥
बिन गुरु जल धार, निगुरे सकल बहें री ।
दुख कलेश आपत विपत, चहुँ दिस जग में व्याप ।
जीव छुड़ावन सतगुरु, प्रगटे आप ही आप ।
सब का किया उद्धार, जो कोई शरण चहे री ॥
राधास्वामी आदि गुरु, परम दयाल प्रवीन ।
अभय करें पद भक्ति दे, तारें जीव अधीन ॥
नहीं उसका बारा पार, जो गुरु भक्ति लहें री ॥

गताँक से आगे—(सप्ताह विचार से)

बहिन—इसका मैं क्या उत्तर दूँ ! ऐसे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये जाते हैं परन्तु इतना मैं कह सकती हूँ कि परलोक वालों की दृष्टि ऊपर की ओर रहती है वह नीचे की ओर न देखते हैं न उनकी समझ रखते हैं । इसी प्रकार लोक वालों की दृष्टि नीचे की ओर रहती है । न वह ऊपर की ओर देखते हैं न उसकी समझ रखते हैं । इतना ही तुम समझ सकते हो । इससे अधिक समझना तुम्हारे लिये कठिन है ।

मैं—परन्तु इस ऊपर नीचे की दृष्टि का प्रमाण क्या है ? मैं कैसे समझूँ कि तुम सत्य कह रही हो ?

बहिन—देखो जो लोग लोक अथवा संसार में रहते हैं वह नीचे ही की ओर तो देखा करते हैं और शारीरिक व्यवहार नीचे की इन्द्रियों के स्थल में होता है इसलिये उनका नीचे की ओर देखना स्वाभाविक है परन्तु जब मनुष्य के मरने का समय आता है तब उसकी आँखों की पुतलियाँ ऊपर की ओर खिच जाती हैं । आँखें उलट जाती हैं चन्द्रायण लग जाता है और ऐसी दशा में वह ऊँचे लोक की वस्तुओं को देखता है पर नीचे के लोक की वस्तुओं को नहीं देख सकता ।

* सुरत शब्द योग के अभ्यास में इसे दृष्टि साधन कहते हैं ।

मैं—तो क्या मरने के पीछे भी ऐसे ही उनकी आँखें ऊपर ही की ओर खिची और चढ़ी रहती हैं ?

बहिन—क्यों नहीं ! परन्तु तुम यह प्रश्न मुझसे न करो । जब मेरे लोक में आओगे तो स्वयं ही इसे समझ जाओगे ।

मैं—इस समय बात तो समझा दो । तुम इस समय कैसे नीचे की वस्तुओं को देख रही हो और मुझसे बातचीत कर रही हो ?

बहिन—मैं इच्छा और प्रसन्नता से नहीं आई हूँ किन्तु आने के लिये वाध्य हूँ ।

मैं—तुमको किसने वाध्य किया ?

बहिन—तुम्हारी स्त्री, मेरी भावज और मेरे पुत्र की मामी ने । वह देवी

है। बड़ी ही सुशीला है और भाई तुम भाग्यवान हो कि ऐसी पतिव्रता स्त्री तुम को मिली है।

मैं—परन्तु उसने तुमको आने के लिये कैसे बाध्य किया ? कहाँ तुम, कहाँ वह ! तुम स्वर्ग में, वह नरक में।

बहिन—वह जब से आई है प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करती रहती है कि तुम पाप कर्म से बचो। आज कई दिनों से वह मेरा नाम ले लेकर मन ही मन कह रही है "नन्द जी ! आओ अपने वीरन को समझाओ। मैं बलात लाई गई हूँ नहीं तो क्यों आती और क्यों ऊपर की ओर से दृष्टि को हटाकर नीचे की ओर देखती ! मैं तो अपनी वर्तमान दशा में प्रसन्न रहती हूँ।

मैं—परन्तु मैं क्या पाप कर रहा हूं जिससे बचाने के लिये वह प्रार्थना करती है ?

बहिन—वह चाहती है कि तुम अपने भान्जे का धन द्रव्य उसको सौंप दो और स्वयं गाढ़े पसीने की कमाई करो। उसकी इच्छा केवल इतनी ही है।

मैं—बहुत अच्छा ! मैं ऐसा ही करूँगा।

बहिन—वाह वीर ! तुम प्रसन्न और सुखी रहो। तुम सच्चे क्षत्री हो। मैं तो तुम और तुम्हारे भान्जे में कोई भेद नहीं समझती परन्तु भाभी को क्या करूँ ! वह नहीं चाहती कि भान्जे का माल लिया जाये। अच्छा तुम उसका धन उसको दे दो।

मैं—उसका बहुत सा रुपया मेरे निजी कार्य में उठ गया है। उसका क्या प्रबन्ध किया जाये ?

बहिन—भाभी से पूछो। वह तुमको बतायेगी अब मैं यहाँ ठहर नहीं सकती।

मैं—परन्तु एक बात तो कहती जाओ। मैं अपने भान्जे को तुम्हारी ओर से क्या संदेशा दूँ ?

बहिन—उससे केवल इतना कह दो कि सम्यक संकल्प वाला

होने का यत्न करे। इसी में उसकी भलाई है।

मैं--कुछ अपना भी हाल सुनाती जाओ।

बहिन—नहीं तुम समझोगे नहीं नीचे स्थान वाले ऊँचे स्थान की बातें नहीं समझ सकते। समय पर तुम स्वयं समझ सकोगे। तुम्हारे बहिनोई मुझे बुला रहे हैं। सबको राम राम कहना भाभी को और अपने भान्जे को भी। अच्छा राम राम अब मैं जाती हूँ।

स्वप्न तो स्वप्न ही है आँख खुल गई। न कहीं बहिन है न उसकी बातें! चाँद आकाश में पूर्ण रूप से चमक रहा था। मैंने अपनी स्त्री को जगाया। उससे कुल बातें कहीं। वह हँसती रही। उसने भान्जे को पुकारा। वह गहरी नींद में सो रहा था। यकायक जाग उठा। मेरे समीप आकर जगाये जाने का कारण पूछने लगा और जब मैंने स्वप्न की बातें उससे कहीं उसने न प्रसन्नता प्रकट की और न अप्रसन्ता। किन्तु कहने लगा आप किस सोच में पड़े हैं। वह धन द्रव्य भी आपका है। मैं भी आपका हूँ। आपने रुपयों के उठाने में कौनसा अनुचित कर्म किया? आपका धन आपके कार्य में लगा। ऐसी बातें कहकर मुझको दुखी न कीजिये। रुपयों के उठ जाने की मुझे कोई चिन्ता नहीं है और मैं अपने को धन द्रव्य के झगड़ों में डालना भी नहीं चाहता।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही मैंने दो चार पड़ोसियों को बुलाकर अपने भान्जे का कुल धन द्रव्य जायदाद इत्यादि बतलाकर उसको सौंप दिया। मेरी स्त्री ने बड़े ही उत्साह से अपने कुल भूषण उसको दे दिये और समझा दिया कि यह उस द्रव्य के बदले में हैं जो मुझसे व्यय हो चुका था और उसी समय से मेरा चित्त ऐसा शान्त हो गया कि मानो मुझे स्वर्ग का धन मिल गया।

मेरी स्त्री बहुत ही प्रसन्न थी और इसी आनन्द में मग्न रहते हुये उसका प्राणान्त भी हो गया। दिल की धड़कन बन्द होते ही वह ठन्डी हो गई, परन्तु मरते मरते वह मुझको ढारस देती और अपने

शेष पृष्ठ ३० पर

प्रवचन

परम दयाल परमसन्त पं० फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ३०-११-८०

नाम दान प्रदान कीजै, गुरु दीन दयाल ।
चरण का नित ध्यान सुमिरन, चित न व्यापे काल ।
सर्व समरथ सर्व अंग संग, सर्व जगत आधार ।
शुद्ध मन से पद कमल को, करूँ निस दिन प्यार ।
सिन्धु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
विकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊ किनार ॥
दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरन लगाय ।
भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय ।
शब्द में रत रहूँ पल पल, सुरत पावे चैन ।
राधास्वामी दया सागर, जपू मैं दिन रैन ॥

राधास्वामी !

मैं सन १९०५ में पंथ में आया था । मेरा भाग्य अच्छा या बुरा मैं नहीं कह सकता । प्रकृति एक दृश्य द्वारा मुझे दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलालजी महाराज के चरणों में ले गई । उन्होंने यह सन्त मत दिया तथा नाम की महिमा बताई । इस सन्त मत राधास्वामी मत और कबीर मत ने सब का खण्डन किया है तथा कहा है कि वहाँ कोई भी नही पहुँचा । मैं सोचता था कि मैं कहाँ फँस गया । तब मैंने अपनी जिन्दगी में प्रण किया था कि मैं सच्चा होकर चलूँगा जो कुछ मेरा अनुभव होगा वो मैं बता जाऊँगा । अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या फकीरचन्द ! तुमको नाम मिल गया । तो तुमको क्या मिलगया ।

इस शब्द में नाम की शर्त यह है कि चित्त न व्यापे काल । लोग नाम ले लेते हैं कोई राधास्वामी, कोई वाहे गुरू, कोई राम राम या कोई अल्ला

हू जपता है। क्या इस प्रकार जाप करने से इन्सान के चित्त में काल नहीं व्यापता काल समय को कहते हैं। समय के प्रभाव से चित्त में जो परिवर्तन आते हैं उनके प्रभाव में न आना ही काल से बचना है। संसार में कभी दुख आता है। कभी सुख आता है कई प्रकार के ख्यालात आते हैं। वो कहते हैं मुझे वो नाम दें ? जिससे मेरे मन में काल न व्यापे अर्थात संसार में रहते हुए जो कुछ भी स्थितियाँ परिस्थितियाँ बीतती हैं उनका प्रभाव हमारे दिल पर न जाये इस अवस्था का नाम है। जिह्वा से तुम बेशक माला फेरते रहो, राम-राम कहते रहो, राधास्वामी जपते रहो, या पंचनाम का सुमिरन करते रहो अगर यह हालत तुममें नहीं आई, कि दुनियां की परिस्थिति में रहते हुए आपको चिन्ता, फिकर व गम नहीं व्यापता। बल्कि अपने रूप में उडा अडोल रहते हैं तब तो तुमको नाम की प्राप्ति हो गई और अगर नाम जपते हुए तुमको चिन्ता आती है फिकर व गम भी आता है तो फिर तो वो नाम नहीं है गुरु नानक साहब ने भी निर्भय निर्वैर और अडोलपने को ही मंजिल यान नाम की प्राप्ति बताया है।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ तो वो नाम अहाँ काल नही व्याप्ता और जिसका वर्णन जहाँ है वो नाम है या यदि संतों ने ऊटपटाँग लिख दिया है। वो नाम है उस नाम के बारे मेंसंत कहते हैं:—

नाम रहे चौथे पद मांहि,
यह टूटे त्रिलोकी माँहि।

वह नाम चौथे पद में हैं। चौथा पद क्या होता है ? एक शरीर एक मन और एक हमारी आत्मा जो इन तीनों दर्जों से निकल कर ऊपर जा सकता है। यानि शरीर बोध भान मन के बोध भान और आत्मानन्द के आगे जो नहीं फँसता और इनसे आगे जा सकता है उस आगे जाने की अवस्था का नाम "नाम" की प्राप्ति है।

अब मेरे मन में यह प्रश्न आता है कि हमको सहस दल कवल त्रिकुटी आदि में सुमिरन ध्यान बताया गया है। यह सहस दल

कमल त्रिकुटी सुन्न महासुन्न और भ्रम गुफा है या भूं भुवः स्वः महाजन तपः यह मानसिक जिन्दगी के बोध भान हैं। जब तक कोई व्यक्ति शारीरिक जिन्दगी के बोध भान और मन की जिन्दगी इन बोध भान से गुजरता हुआ आगे नहीं जायेगा वो चौथे पद में यानि सत्त अलख और अगम में जो सूरत के बौध भान के दर्जे हैं, उनमें कैसे जा सकता है। तुम बैठो, ध्यान लगाओ तुम्हारे कभी खारिश होगी कभी मन में तरह - तरह के विचार पैदा होने लग जायेंगे इसलिये नाम चौथे पद में रहता है। उसको प्राप्त करने के लिए यह मार्ग के साधन हैं। मैंने सारी आयु अभ्यास में गँवादी मुझे इन मानसिक दर्जों से गुजरने में पूरी सफलता तब मिली जब मुझे मन के रूप का ज्ञान हुआ यानी वास्तविकता की समझ उस समय आई जब मुझे यह पता लगा कि मेरे मन के अन्दर जितने भी ख्यालात उठते हैं यह माया है। इसलिये अब इसके जितने actions है उनका मेरे पर प्रभाव नहीं होता तथा मैं इनको छोड़ जाता हूं मगर आप लोग छोड़ नहीं सकते। अगर आदमी में ख्यालात को छोड़ने की शक्ति आजाये तो अधिक अभ्यास को आवश्यकता नहीं। इन्सान सीधा ही शरीर और मन के तबकों को छोड़ कर अपने आप को आने में ठहरा सकता है अगर यह कठिन है इसलिए इसका साधन है तथा मैं अपनी ओर से इसको सरल कर जाना चाहता हूँ।

सन्तों ने इन दर्जों के सहसदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा सतलोक, अलख, अगम और अनामी नाम रखे हुए हैं। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तूने अभ्यास किया है? यह जो कुछ किताबों में लिखा है कि सहसदल कमल में घन्टा बजता है शंख सुनाई देता है आदि क्या यह ठीक है? मैं कहता हूँ कि यह ठीक है यह जो पहला दर्जा है यह तुम्हारे अपने मन की स्टेज है इस मन में से अनेक प्रकार की भाव व विचार हर समय निकलते रहते हैं क्योंकि अनेक प्रकार के ख्यालात निकलते हैं इसका नाम उन्होंने

सहसदल कमल रखा हुआ है यानी हजार पंखुड़ियों वाला फूल। अन्दर फूल तो कोई नहीं वो तुम्हारा मन है उसके अन्दर से जो ख्यालात व विचार निकलते हैं उनका नाम सहसदल कमल है। अब तो कहते हैं कि यहाँ घण्टा बजता है। कभी किसी सन्त ने कहा है कि यह घण्टा क्यों बजता है? क्या तुम्हारे अन्दर कोई घड़ियाल है जिससे घन्टा बजता है? यह घण्टे की आवाज क्यों आती है? मैंने जो समझा वो कहना चाहता हूँ। मुझे समझ कैसे आई? क्योंकि मैंने पहले बगदाद में इन दर्जों को पास किया हुआ है। अब मैं लाख प्रयत्न करता हू कि मैं घण्टा, रारंग, सारंग या ओंकार सुनूं अब वो मुझको सुनाई नहीं देते। पहले जब मैं बसरे बगदाद मे रहा वहाँ सुनता था। यह सब कुछ मैं देखता था प्रकाश इनका है सहसदल कमल में रोशनी पीले रंग की त्रिकुटी में रोशनी लाल रंग की, सुन्न में रोशनी चाँद की रोशनी के समान, महासुन्न में अन्धकार भँवर-गुफा में सूर्य की रोशनी इस प्रकार का वर्णन वहाँ था। अब मैं सोचता हूँ, अब मैं अभ्यास करता हूँ कि अब मुझे यह निम्न नजारे नजर क्यों नहीं आते। मैं अब बहुत प्रयत्न करता हूँ तथा कई बार सोचता हूँ परन्तु मैं पथ भ्रष्ट होगया या मेरा अभ्यास खराब होगया यह भ्रम मुझे कई बार आता रहा है। अब दाता दयाल जो महाराज तो हैं नहीं कोई महात्मा ऐसा नहीं है जिससे मैं कहूँ कि यह राज क्या है। जो कुछ मेरी समझ में आया दोस्तो वो मैं बता देता हूँ। मगर मुझे कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही अन्तिम है। मेरा सारा जीवन सचाई में गुजर गया। अब मैं अब मैं समझता हूं कि प्रथम दर्जे में घण्टा क्यों बजता है। जिन व्यक्तियों के मन के अन्दर साँसारिक स्थूल पदार्थों की इच्छा होती है जब वो अभ्यास करेंगे उनको घण्टे की आवाज सुनाई देगी। क्यों? बाहरी बातें मिलाकर हम घड़ियाल बना लेते हैं उस पर ठोकर मारते हैं तो घण्टे की आवाज आती है। हमारे मन रूपी जो ख्यालात हैं इसने भी

पृथ्वी, पानी वायु, अग्नि तथा आकाश पाँच तत्व मौजूद हैं। तो जिस व्यक्ति के अन्दर दौलत मान आदि दुनिया के स्थूल पदार्थों की इच्छा रहती है वो जब भी अभ्यास करेगा तब उसके अन्दर घण्टा बजेगा। क्योंकि अब मैं इन इच्छाओं के बखेड़े से जाजाद होगया हूं इसलिए मैं लाख प्रयत्न करूँ मुझे घण्टा सुनाई नहीं देगा यही मेरी समझ में आया है। मैं स्वयं हैरान होता हूँ कि मैं बहुत कोशिश करता हूँ कि मैं फिर घण्टा सुनूं या रारंग, सारंग सुनूं मगर अब सुनाई नहीं देता अब वो अन्तिम शब्द सुनाई देता है जिसे सार शब्द पंच नाम या सत नाम कहते हैं। सीधा उसे ही पकड़ता हूं। मैंने यह समझा।

त्रिकुटी में क्या होता है? लाल रंग नजर आता है, गुरु मूर्ती नजर आती है। त्रिकुटी के स्थान से बेद, शास्त्र सब निकलते हैं। किताबों में भी यह लिखा हुआ है कि जितनी बिद्या है यह इस त्रिकुटी से ही निकलती है। मैं सोचता हूँ कि क्या यह ठीक है? हाँ यह ठीक है। जब हम किसी चीज के अपने अन्दर पकड़ते हैं जैसे मैं बाहर किसी बस्तु को जोर से पकड़ूंगा तो मेरे मुँह पर लाली आएगी या नहीं आएगी। इसी प्रकार जब हम अपने अन्दर गुरू या इष्ट की मूर्ति बनाते हैं तो हमारे मन को जोर लगाना पड़ता है। तो क्योंकि हमारे अन्दर सूक्ष्म नाड़ियाँ हैं उसे खून के दौरे के कारण हम को वो स्थान लाल नजर आता है इसलिए त्रिकुटी में लाली नजर आती है क्योंकि मुझे अब यह यकीन होगया है कि यह जो रूप मेरे अन्दर बनता है यह मेरा ही बनाया हुआ था। इसलिए अब मैं लाख प्रयत्न करूँ अब मेरे अन्दर वो लाली नहीं आएगी। अतः जिसको सत्संग में यह ज्ञान हो जाता है उनके लिए यह निम्न दर्जों में अभ्यास करने की जरूरत महसूस नहीं होती है। मैंने रास्ता इतना साफ कर दिया है कि जिसके लिए मुसीबत उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब प्रश्न यह है कि इस त्रिकुटी में से वेद या

ज्ञान कैसे निकलते हैं ? हम जब किसी वस्तु को देखना चाहते हैं तो एक हम होते हैं एक वो होता है जिसको खोज करते हैं तथा साथ में एक हमारी लगन होती है। त्रिकुटी में यह तीन चीजे इकट्ठी होती है। ज्ञान हमको तभी प्राप्त होगा जब हम किसी चीज को देखकर उसको ओर आकर्षित होते है। साइस आदि एवं विद्याओं की खोज कैसे की गई ? मस्तिष्क के बीच बैठकर इस ओर ध्यान करते रहे जिस चीज का ध्यान कर लगन बाँधते रहे उनका दिमाग अपने आप चलता रहा। कोई विज्ञान में उन्नति कर गया। किसी ने ऐटमबम बना लिये। यह जितना आध्यात्मिक या संसारिक ज्ञान है यह सब त्रिकुटी के स्थान से निकलता है क्योंकि उसमें एकाग्रत आजाती है। कहते है वहाँ बादल को गरज पर ओंम की आवाज होती है क्या वहाँ बादल गरजता है ? नहीं बादल नहीं है। जिस प्रकार सूर्य समुन्द्र से पानी को खेंच लेता है तथा ऊपर जाकर बादल बन जाते हैं उसी प्रकार जब हम संसारिक इच्छाओं को छोड़कर केवल परमार्थ के रंग में ऊपर जाते हैं तो हमारी यह स्थूल पदार्थ की इच्छा तो समाप्त हो जाती है मगर आगे जाने की इच्छा में सारी वृत्तियाँ इकट्ठी होती हैं। इकट्ठी होने से जो हमारे खयालात इकट्ठे दूर वो ऊपर दिमाग में जाकर आपस में रगड़ खाते हैं वहां उनकी आवाज बम्ब बम्ब ओंम ओंम पर वाहें गुरु निकलती है और यह ओंम का स्थान हो है। यहाँ से संसार बनता है। इसी मुकाम से तीन चीजे पैदा होता हैं। विचार पैदा होता है ठहरता है तथा फिर खत्म हो जाता है। यही ब्रह्मा, विष्णु महेश हैं और इन्हीं से सृष्टि को रचना होती है। यह त्रिकुटी का जितना खेल है यह सूक्ष्म प्रकृति है इसी का नाम माया है। यही गुरु नानक साहिब ने कहा है।

एकौ माई जगत व्याही, तीन चेले प्रवाण।
एक संसारी, एक भण्डारी, एक लाये दावान।

क्योंकि वह सूक्ष्म प्रकृति है अब संतों का इष्ट ओम नहीं बल्कि

सत पद संत है। जब हमारा मन यहाँ इकट्ठा होजाता है तो वह ओम का बिन्दु हो जाता है। हमने बाहर में नुकता दे दिया अन्त में हमारा मन इकट्ठा व अकेला हो जाता है विचार छूट जाते हैं उस समय की अवस्था में हमारी वृत्तियाँ खींची हुई होती हैं। रारंग सारंग की आवाज होती है। यह क्यों होती है? जिस प्रकार सारंगी में आप तार खींच लो उस पर गरज चलाओ तो रारंग सारंग बजता है इसी प्रकार जब अभ्यास में मन की वृत्तिया खिच जाती हैं और उस पर सुरत चलती है वहा जो आवाज आती है उसको रारंग सारंग कहते हैं।

तो मेरे कहने का अर्थ क्या है कि हमारा इष्ट क्या है? हमारा इष्ट है नाम की प्राप्ति। यहाँ हमको कोई फिक्र, चिन्ता, गम, भ्रम व बहम न रहे यही दाता दयाल कहते हैं —

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल,
चरण का नित ध्यान सुमिरन, चित न व्यापे काल।

तो हमने नाम क्यों जपना है? ताकि हमको इस संसार में रहते हुए डर, फिक्र, चिन्ता, भ्रम, बहम न आये। इस गरज के लिए हमने नाम जपना है। इसको प्राप्त करने के लिए मन की वृत्तियों को इकट्ठा करना है ताकि मन की वृत्तियों का तर्जुबा करने के बाद फिर आप मन को छोड़ गये।

अगर बात समझ में आजायें तो इन निचले दर्जों पर साधन करने की आवश्यकता नहीं। केवल अपने आप को अपने अन्तर में मन को छोड़ कर आगे ले जाओ। इन साधनों की कोई आवश्यकता नहीं है। यही बात दाता दयाल ने गोरखपुर में की काशीनाथ मुख्तियार को कही थी कि समय आएगा जब आधुनिक संत यह अभ्यास का तरीका सोहंग से शुरु करेगे। जिस तरह राधास्वामी मत और कबीर मत में षटचक्र छुड़ा दिये तो जो आने वाले संत हैं वो इस मन रुपी चक्र से भी छुड़ा देगे। इस मन रुपी चक्र में फसने की क्या आवश्यकता है जिनको मससन्द की आवश्यकता है जो मन की इच्छाओ में फसे हुए हैं उनके लिए यह मन का साधन है मगर जो अपने घर

जाना चाहते हैं उनको मनरूपी चक्र में साधन की कोई आवश्यकता नहीं वो केवल अपने मन को छोड़ कर सीधा अपने आप में ठहरने की कोशिश करे। प्रकाश ही गुरू के चरण और शब्द गुरू का रूप है। अगर यह हो जाये तो फिर क्या होगा। केवल अभ्यास करने से आपका नाम नहीं बनेगा। अभ्यास के साथ किसी योग्य निर्बन्ध पुरुष की संगत की आवश्यकता है ताकि वह तुमको इस संसार का सम्पूर्ण भेद बता कर तुमको वैराग्य दे दे। ताकि तुम उस संसार रूपी चक्र की इच्छा न रखो। इसलिए जो ऊँचा सन्तमत है यह साधारण गृहस्थियों की चीज नहीं है वल्कि खास व्यक्तियों के लिए ही है। बिशेष व्यक्ति ही इसके अधिकारी हैं जिनको अपने घर जाने की आवश्यकता है और जो मन रूपी चक्र से ऊपर आ चुके हैं।

इन सांसारिक व्यक्तियों के लिए सन्तमत की शिक्षा नहीं है वल्कि उनके लिए वेद मार्ग है कि अपना ख्याल ठीक रखो रूप बनाओ मगर किसी एक व्यक्ति का रूप वनाओ। जब मन इकट्ठा हो जाएगा तुम्हारी संसारिक चीजें अपने आप उपलब्ध होती रहेंगी। यह जो प्रथम दर्जा है इसमें अभ्यासी को अगर वो मूर्त बनाले या ज्योति प्रगट करले तो उसकी जो सांसारिक वासनायें हैं वो पूरी होनी चाहिए तथा होती भी हैं जो संसार चाहते हैं सांसारिक उन्नति और स्थूल पदार्थ की चीजें को प्राप्त करना चाहते हैं उनको पहले दर्जे सहसदल कमल (भँवर मध्य) में अभ्यास करना चाहिए। यहाँ ध्यान किया करो। गुरू रूप बनालो या मन को सुमिरन से इकट्ठा करो और यह वासनायें रखो जो कुछ तुम चाहते हो अगर न मिले तो मैं जिम्मेदारी लेता हूँ। मैंने बहुत तजुर्वा किया है मगर यह जो रूप तुम बनाते हो उसको पूर्ण मानो इसे यह मत समझो कि यह फकीरचन्द या कोई और गुरु है वल्कि उसको यह समझो कि यह पूरा है। जिस प्रकार यह दाता दयाल की मूर्ति है हम इसे पत्थर की मूर्ति तो नहीं कहते। इसलिये ऐ इन्सान अगर सांसारिक कारोबार की उन्नति चाहता है तो जहाँ इस सहस्त्रदल कमल के स्थान पर ध्यान किया करो यह ध्यान चाहे ज्योति का हो या गुरु स्वरूप का जिस वासना या इच्छा को लेकर के तुम ध्यान करोगे तुम्हारी वासनायें पूरी होगी।

इसे कोई रोक नहीं सकता क्योंकि यह Low of Nohere है। इसलिए सांसारिक वस्तुओं के लिए यहां अभ्यास किया करो और यही गायत्री मन्त्र सिद्ध करने वाले तन्त्र या जादू करने वाले करते हैं। ख्याल की ताकत है और कुछ नहीं। अगर समझ चाहते हो तो, कोई खोज ज्ञान या अनुभव चाहते हो तो त्रिकुटी का स्थान है। जिस चीज की इच्छा है उस ख्याल को लेकर यहां बैठ जाओ उसी पर सुमिरन करते रहो तुम्हारी सहायता होती रहेगी। अगर मस्ती व आनन्द चाहते हो जिस तरह शराब पी हुई होती है तो सुन्न में अभ्यास करो। यह तुम्हारे अपने अधिकार में हैं मगर यदि पार जाना चाहते हो, सांसारिक भय से बचना हो तो इन दर्जों या अभ्यास करने से तुम बच नहीं सकते फिर तो तुमको इस मन के सभी ख्यालात को छोड़ना पड़ेगा। फिर मन से ऊपर जाओ। अब मैं मन से ऊपर जाता हूं क्योंकि मैं समझ गया कि यह संसार मेरा नहीं, न ही मैंने यहां रहना है।

देखो ! मैं तुमको धोखा नहीं दे रहा। अज्ञान में आकर इन गुरुओं के आगे मत लुटो। हम गुरुओं ने आप लोगों को सच्ची बात बिल्कुल नहीं बताई बल्कि अपने मान, डेरे और अपनी दौलत के लिए हमने आपको फंसाया हुआ है यह मैं दर्द दिल से कहता हूँ। मेरा जीवन सचाई की खोज में गुजर गया और वो यह है कि तुमको जो कुछ मिलता है केवल तुम्हारे अपने विश्वास अपने प्रेम और यकीन का फल मिलता है। बाहरी गुरू या कोई महात्मा कोई कुछ नहीं देता। हां अगर वो देता है तो तुम्हारे विचार को बदलता है ऐसी बात कहता है जिससे तुमको विश्वास आजाये। तुम्हारे बिश्वास ने तुम्हारा काम करना है। तुम लोग जो मेरी सेवा करते हो अगर मैं यह सचाई ब्यान नहीं करता तो यह तुमसे जो सेवा लेता हूँ यह मेरी जान को खा जाएगी। मैं कहां जाऊँगा ? क्योंकि मैंने तुमको धोखा दिया है अगर ज्ञान दाता के रूप में मेरी सेवा करते हो तो मैं उसको ग्रहण करने के लिए तैयार हूं। आग लगे गुरुआई को। मेरा जीवन चार दिन का है मैंने मर जाना है। इस समय यदि मैं खोटे कर्म करूँगा तो इसे मुझे भरना पड़ेगा। जो महात्मा सच्चाई नहीं बताते क्या परिणाम होगा यह मुझे मालूम नहीं।

और यदि सच पूछते हो मैं इतना बोलता हूं कि मैं मन को छोड़ कर ऊपर अपने रूप में रहता हूं लेकिन मैं गिर जाता हूँ। जब मुझको नाम या गुरु ज्ञान जो कि एक ही बात है भूल जाता है तो मैं भी गिर जाता हूँ मैं कल गिर गया। कैसे गिर गया ? कल डा० के० एल० साहिब मेरे मकान पर गये तथा हस्पताल के कर्मचारियों के कुछ हालात सुनाये जिससे मुझे क्रोध और अफसोस आया। यह मेरी गिरावट है। जिस आदमी को नाम मिल जाता है वो न क्रोध करता है न ही उसको खुशी आती है तथा नहीं वो रोता पीटता है। रात को मुझे अपने अन्तर का ज्ञान हुआ कि तू योंही कहता है कि तुमको नाम मिला हुआ है। अगर तुमको नाम मिला हुआ होता तो तुमको क्रोध क्यों आता ? तो नाम क्या चीज है ? नाम है अनुभव। रात को मैं अपने मन में बहुत पछताया। मैंने कहा फकीरचन्द ! तू साधु बन गया भाषण देता है पर तू आप तो गिर गया। केवल शब्द सुनना नाम नहीं है अनुभव और ज्ञान नाम है जो व्यक्ति दोनों चीजें साथ रख कर चलता है वो इस रास्ते पर सफल होता है इसलिए बार-बार सत्संग और अभ्यास दोनों चीजों पर जोर दिया जाता है। स्वामीजी की वाणी है--

विनु सत्संग जो शब्द में पचते, वो भी मूर्ख जान।

आज शब्द था--

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल,

चरण का नित ध्यान सुमिरन, चित्त न व्यापे काल।

संसार इन चरणों को पूजता है। चरण गुरु के प्रकाश हैं और नाम शब्द है। मगर यदि शब्द को ही सुनते रहे और तुमको किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग नहीं मिला तो वो भी अधूरा है। अब देखो। रात को मुझे सतसंग मिल गया। मैंने जौड़ा साहिब को गुरु रूप दाता दयाल समझा कि गुरु ने आकर मुझे यह चेतावनी दी कि तेरे अन्दर यह दोष है तो मैंने अपने दोष को दूर करने का प्रयास किया। सन्तमत में आना और अमली जीवन बिताना महा कठिन है। मगर मैं इतनी बात कह देता हूँ कि मैंने यह आसान कर दिया कि कुछ नहीं करना केवल विचार के रहते हुए अपने आपको दुनिया में

मत फँसाओ। एक मालिक है उसका एक रूप मान लो। अपने आपको वहाँ समझो, समझलो कि वहाँ तो रहना नहीं। मैं अब यही समझता हूँ। रात को उन्होंने बात कही मुझे क्रोध आगया मैंने कहा मैं प्रातः उनकी खबर लूंगा फिर वह चले आये तो मैंने सोचा फकीरचन्द ! तू नामधारी बना हुआ है, तुमने खाक नाम लिया, तुम्हें क्रोध क्यों आया ? तू क्रोध किसलिए करता है ? तू समझता है कि मन्दिर तेरा है ? तेरे बाप का मन्दिर है ? इससे यह [illegible]वित हुआ कि तुमको मन्दिर से लगाव है। उस समय मैंने अपने आपको धिक्कारा और अपने आपको समझाया कि तुझे मन्दिर से क्या ? तू [illegible]ता क्यों करता है ? यह विचार आते ही मन से लगाव नहीं रहा। इससे [illegible] शान्ति प्राप्त हुई। तो नाम क्या चीज़ है ? नाम केवल शब्द को सुनना हो नहीं है वल्कि नाम इसलिये दिया जाता है। तथा अभ्यास इसलिये करवाया जाता है कि हमारे चित्त की वृत्तियाँ व मन एकाग्र होकर, ठहर कर के हम किसी बात को जानने व समझने के योग्य हो जाये। मगर जब तक किसी पूर्ण इन्सान का सतसंग नहीं मिला हुआ है शब्द योग भी कोई लाभ नहीं पहुँचाता। अब देखो न मैं कितना अभ्यासी था रात को मैं गुरु ज्ञान से गिर गया। क्यों गिर गया ? क्यों कि मुझे गुरु ज्ञान लूल गया था। मैं भूल गया था कि मैं कौन हूं। मैं तो संसार फंस गया। मन्दिर को अपने आप में फंसा लिया कि मेरा मन्दिर है। तेरे बाप का मन्दिर है ? मैंने अपने आप को रात में बड़ा धिक्कारा।

मैं तो ऊंचा चला गया। मेरा अपना कर्म भोग है आप लोग आ जाते हैं, इस राधास्वामी की कवियों और गुरुओं ने ऐसी वाणियों को कह-कर हम गृहस्थियों को मूर्ख और पागल बनाया हुआ है। हमको कोई सच्ची बात नहीं बताता 'मैं यह निडर होकर कहता हूं कि मैं भी गुरु को चरण धोकर पीता पीता मर गया आपने भी ऐसा किया होगा। गुरु के चरण प्रकाश है, नूर है अपने अन्दर प्रकाश के साधन को पकड़ो। तब गुरु के चरण पकड़ोगे मगर यह हो नहीं सकता। तुम्हारे मन में दुनिया की बासनायें हैं, क्रोध है, लोभ है, लालच है। तो क्या फायदा ? जो आदमी ४२० या हेरा फेरी करता है

वो अगर कहे कि मैं सतलोक चला जाऊँगा उसका बाप भी नहीं जा सकता। जो इच्छा हो करले—

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल।

क्योंकि मैं गुरु का काम करता हूँ। यही मेरा नाम दान है कि ऐ इन्सान अपने विचार से अपने आपको समझ ले कि तू कौन है, यह संसार तेरा नहीं है, तेरा घर ऊपर है। वो जो सार शब्द है उसको पकड़। इतना ही झगड़ा है और कुछ नहीं है—

चरण का नित ध्यान सुमिरन, चित्त न व्यापे काल।

किस चरण का ? प्रकाश का। गुरु के चरण प्रकाश हैं अगर जाना चाहते हो तो प्रकाश को पकड़ो और जब तक नहीं आता तो जिस गुरु से तुमने नाम लिया है उसका ध्यान करो और जो एक तुम्हारे प्रकट होता है उसको यह न समझो कि वो फकीरचन्द या कोई और शरीर धारी गुरु है। बल्कि उसे पूर्ण समझो तुम्हारा बेड़ा पार हो जाएगा। अगर तुम यह समझते हो कि तुम्हारे अन्दर जो गुरु आया यह कोई बाहरी गुरु आया है तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा यह ठीक है कि तुमको दुनिया मिल जाएगी, दुनिया के काम बन जायेंगे मगर परमार्थ नहीं मिलेगा यही भेद है जिसे मैं बताना चाहता हूँ। किनके लिए ? उनके लिए जो चाहते हैं कि हमारा बेड़ा पार हो जाय और जो ऐसी आशा नहीं रखते हैं उनके लिए कोई आवश्यकता नहीं—

सर्व सामर्थ्य सर्वाङ्ग संग सर्व जगत आधार।

अब देखो। बाहरी गुरु की अगर यह स्तुति होती तो क्या वह हमेशा तुम्हारे साथ रहता है ? फर्ज करो तुमने मुझे गुरु कर लिया क्या मैं तुम्हारे साथ २४ घन्टे रहूंगा ? वो तो कहते हैं कि सर्वाङ्ग संग। वो अंग संग रहने वाला कौन है ? दिवानो ! ऐ मेरे फकीरचन्द के मन तू भी सारा जीवन पागल रहा वो ताकत है, वो हमेशा तुम्हारे पास रहती है। वो प्रकाश की ताकत है और वो शब्द की ताकत है जो तुम्हारे अन्दर रहती है। और सोचो कि क्या फकीरचन्द जगताधार हो सकता है ?. सोचो मेरी बात को। हो

सकता हो तो मुझे बताओ। वो एक ताकत है उसके रूप को समझकर तुम्हारा बेड़ा पार होगा—

शुद्ध मन से पद कमल को करूँ निसदिन प्यार।

अपने अन्तर में अपने मन को साफ रखो। मालिक सतगुरु तुम्हारे अन्तर रहता है बाहर नहीं रहता। अपने आपको सच्चा बनाकर उसके आगे उससे प्यार किया करो तुम्हारा काम हो जाएगा। दुनिया भी बन जाएगी, दीन भी बन जाएगा। किसी बाहरी गुरु ने नहीं करना बल्कि तुमने आप करना है—

सिन्धु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार।
विकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊँ किनार॥

मन रूपी जो समुद्र है उसमें तरह तरह के ख्यालात उठते रहते हैं। अब मैंने रात का अपना वाक्या सुनाया कि मुझे क्रोध आगया तो मैं कहाँ फँस गया? अपने मन रूपी समुद्र में फँसा कि नहीं फँसा? सारे ही फँसते हैं मैं कई बार कहा करता हूं कि मैं गिर जाता हूँ यही मेरा गिरना है। कब गिरता हूं? जब मुझे गुरु ज्ञान नहीं रहता, जब मुझे सच्ची समझ नहीं रहती और जब यह भूल जाता हूँ कि मैं कौन हूं तभी मैं फँसता हूं। मैं क्या बड़े बड़े फँसते हैं। मगर जो फंस कर अपने आपको समझता है कि मैंने गलती खाई है उसका तो उद्धार हो सकता है और जो फंसता है और फिर अपनी गलती को अनुभव नहीं करता उसका उद्धार नहीं होता—

चलते चलते जो गिरे, ताहि न लागे दोस,
जो घर ही से ना चले, ताके सिर कसे कोस।

जीवन हरकत का नाम है। कोई व्यक्ति भी जो जीवन युक्त है चाहे सत हो या अवतार हो गलतियाँ सब खाते हैं। कोई इन्सान ऐसा नहीं जिसमें गलती न हो। बुरी भली प्रत्येक में है। यह Region ही ऐसा है। जो जो व्यक्ति अपने आप को बचाना चाहता है वो अपने मन की हालत को देखा करे। हमेशा निरख परख करता रहे। खास कर रात को सोते समय यह सोचे कि सारा दिन तुमने क्या कुछ किया कहां कहां तुमने गलतियाँ खाई हैं उनको दोबारा न करने का प्रयत्न करो। जिन्दगी बन जाएगी। ईसाइयों में

Confession यानी अपनी गलतियों को मानने की एक प्रथा है जिसकी वो मरते दम तक पालना करते हैं। अगर तुम अपनी गलतियां दूसरों को नहीं बता सकते तो अपने अन्दर मन में विचार किया करो। आदमी ऐसी कई गलतियाँ करता है जो जनता के सामने नहीं बता सकता मगर वो अपने अन्दर तो विचार कर सकता है। जो ऐसा करता है उसका मन किसी न किसी दिन पवित्र हो जाएगा To be true to be Conscience is very hard speaking truth clean consuence की निशानी है moral courage का सबूत है। यह मन को निर्मल करने का साधन है—

दया कीजे महर कीजे, लीजे चरन लगाय,
भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय।

तो बाहरी गुरु की क्या duty है ? जो मैं कर रहा हूं कि ऐ इन्सान ! असली गुरु शब्द स्वरूप है, उसके चरण प्रकाश हैं. अपने अन्तर चल। जो कुछ तुमको मिलना है तुम्हारे अन्तर में मिलेगा। आप लोग आजाते हैं मैं तो कर्मों का मारा हुआ हूं, सच्ची बात आपको कहता हूँ। न मैं यह कर्म करता तथा न ही यह प्रण किया होता कि जो अनुभव होगा बता जाऊँगा अतः न न मैं इस जिन्दगी में फँसता। मैं इस काम के करने से सुखी नहीं हूं। मन्दिर बना बैठा। अब यहाँ के कर्मचारियों के कारण अपनी जान को मुसीबत ले ली। क्या कहा मैंने ? मगर यह मेरा कर्म था। आप लोग आजाते हैं जो कुछ मैंने जिन्दगी में समझा बता दिया। नाम क्या है ? गुरु की आज्ञा जो आज्ञा गुरु देता है वही इन्सान के लिए नाम। उसके ऊपर चलो। मैं नहीं कहता कि मैं गुरु हूँ। जहाँ जहाँ तुम जिस गुरु को मानते हो उसी गुरु को मानो। मैं तो गुरु बनने के लिए तैयार नहीं हूं। मैंने तो सच्चे दिल से गुरु मत को समझा। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं दाता आपने काम दिया था। मैं यहाँ फंस गया। मुझे क्या पता था कि मुझे ऐसे व्यक्तियों से वास्ता पड़ेगा जो यहाँ क्या कुछ करते हैं मन्दिर बदनाम करते हैं। तो आज मैंने आप लोगों बहुत कुछ कह दिया। मैं दुखी हूं इनसे नहीं बल्कि अपने मन से दुःखी हूं। उसे समझाता हुं

कि फकीरचन्द ! तूने क्या लेना। चार दिन का जीवन है। मन्दिर जैसा भी हो तुम्हें क्या ? मगर रात को मुझे क्रोध आगया और मैंने अनुभव किया कि मेरी गलती थी। तो आज मैंने आपको बता दिया कि नाम क्या है तथा कैसे मिलता है—

नाम रहे चौथे पद माहिं।

वो तुम्हारी अपनी ही जात है। वो प्रकाश और शब्द का भंडार है। अगर दुनिया व मन का आनन्द लेना चाहते हो तो यह निचले दर्जों का साधन किया करो और अगर बिल्कुल पार जाना चाहते हो तो मन को छोड़ कर ऊपर चले जाओ दोनों ही बातें हैं। फिर नाम क्या है ? तुम्हारा अपना ही आप तो है। अपने आपको अपने आप में ठहराओ। इसका नाम नाम की प्राप्ति है। नाम की महिमा सत सनातन धर्म भी करता है —

कलि केवल एक नाम अधारा,
वेद शास्त्र, श्रुति मत सारा।

जिन्दगी और है, हस्ती और है हमारा मकसद है कि जिन्दगी से सतपद में चले जायं—

विनती

राधास्वामी मेरी विनती, प्रेम से सुन लीजिये,
चित हटाकर जगत से, चरणों की छाया दीजिये।
मन हो निश्चल ध्यान धरने से वह उकताये नहीं,
सुरत ठहरे और ठहरने से वह घबराये नहीं।
रात दिन सुमिरन हो रसना, नाम का रस ले सदा;
मैं भजूँ हित चित से गुरु के, नाम ही को सर्वदा।
रूप का हो ध्यान सुमिरन, नाम का अन्तर में हो
शब्द का साधन भजन हो, तन की सुध बुध सारी खो।

तन मन में इन्द्रियों में बुद्धि, और तुम चित में वसो,
अंग संग दिन रात मेरे, घट के भीतर तुम रहो।
हाथ में आओ करूँ, व्यौहार में अकार के,
पाँव ऐसे हों, चलूँ मैं पंथ में करतार के।
औरत में बैठो जगत में, आपकी मूरत लखूं,
कान में बैठो सदा मैं, शब्द अनहद का सुनूं।
चलते फिरते जागते, सोते रहो तुम साथ में,
सहज में आजाये, परमारथ की निधि सिधि हाथ में।
मेरा आपा लय तुम्हारे, आपा में हो जाये अब,
सुरत जागे गगन में, पृथवी में वह सोजाये अब।
तू का मैं का मिथ्या झगड़ा, छूटे जीवन मुक्त हूँ,
शुद्ध निर्मल आत्मा हो, सुख से आनन्द से जिऊँ।
राधास्वामी तुम दया सागर, हो सत करतार हो,
ऐसी कृपा कीजिये, अब लोप यह संसार हो।

--:o:--

प्रवचन

परम दयाल परमसन्त पं० फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

९-११-८०

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी ।
धन्य कृपाल सहज दयाला, भव भय मेटनहारी ॥
लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोई जाने ।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावे, ज्ञानी नहीं पहचाने ।
अगुण, सगुण के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया ।
रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया ।
सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत के पारा ।
मन वानी की गम नहीं तुममें, सब में सबसे न्यारा ।
क्या कह करूँ तुम्हारी स्तुति, अजर अमर अविनाशी ।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन घन सुख रासी ।
गो गोचर जहाँ लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा ।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा ।
तत्व अतत्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहिं होई ।
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति खोई ।
ऊँची दृष्टि करे जो प्रानी, सार भेद कुछ पावे ।
भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे ।
दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहूँ शब्द मिल एका ।

राधास्वामी ।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा क्यों? पैदा हुआ जब दुनियाँ देखी तो ख्याल आया । इसके बनाने वाला कोई है उसको पूजता रहा, कभी उसको राम समझा, कभी इसको ईश्वर

कहकर पूजा किस्मत मेरी १९०५ में २४ घण्टे रोने के बाद एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई उन्होंने मुझे यह संतमत दिया आज उनका यह शब्द पढा गया जिसमें वह गुरु की स्तुती करते हैं।

धन्य धन्य गुरु परम स्नेही,
धन्य दीन हितकारी ।
धन्य कृपाला, सज्जन दयाला,
भव भय मेटन हारा।

वो किस गुरू की स्तुति करते हैं ? यह ऐसे गुरु की स्तुति कीगई है जो दीन दयाल हो भवभय के मेटने वाला और कृपाल हो। हम लोग बाहरी गुरु को पूजते हैं आप सोचें क्या बाहर के शरीरधारी गुरु में यह सारे गुण हो सकते हैं ? लीला अगम अपार, अमाया अद्-भुत क्या कोई जाने ऋषि, मुनि, योगी पार न पावे, ज्ञानी नहिं पहिचानें। वह कहते हैं वो जो गुरू है जिसकी यह प्रशंसा है कि उसको ज्ञानी नहीं पहचान सकते तथ ऋषि, मुनि भी उसको नहीं पहचान सकते मैंने सारी जिन्दगी इस लगन में गुजार दी। मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूं कि तू गुरुमत का उपदेश करता है, लोगों को सत्संग कराता है जिस के दाता दयाल जी महाराज के इस शब्द में गुण वर्णन किये गये हैं। मैंने जो कुछ समझा बो कहता हूँ--

अगुण सगुण के मध्य विराजे नहीं ब्रह्मा, नहीं माया

वह गुरु कौन है ? जो निर्गुण और सगुण के मध्य रहता है न तो ब्रह्म है और न वह माया है। अब इन वाणियों ने मेरे दिमाग को पागल किया हुआ था मैं नाक कटों में तो शामिल नहीं हुआ। नहीं मैंने सन्तों की जी हजूरी की मैं देखना चाहता था कि जिस गुरू की यह प्रशंसा की गई है वह है भी कि नहीं ? वह है। जो मैंने समझा वो मैं बताता हूँ--

रूप अरूप के बरे परे, तुम नहीं प्रकाश नहीं छाया ।

अब देखो ! जिस गुरु की प्रशंसा का गई है वह कहते हैं कि वह रुप अरुप से परे है यानि उसकी शक्ल है भी और बेशकली से परे है न वह रोशनी है और न छाया है ।

सब में व्यापक तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त से पारा ।

उस गुरु की सत्ता हर व्यक्ति में है मगर वह सत असत के परे यानि पार है वह गुरु है ।

मन वाणा के गम नहीं, तुम में सब में सबसे न्यारा ।

वह कहते हैं कि वहाँ मन वाणी पहूंच नहीं सकती । मेरे दिल में ख्याल आता है कि अगर मन वाणी पहूँच नहीं सकती तो इन संतों ने कैसे जाना ? जब वहाँ मन नहीं जा सकता वाणी भी नहीं जा सकती तो उन्होंने कैसे जाना ।

हम लोगों को उन्होने अजीब उलझन में डाल दिया । जिन्होने ऐसी दे।। बात कहीं और साफ नहीं कही । मैं कहता हूँ जो कुछ लिखा है वह ठीक है । कैसे ?

क्या कह करु तुम्हारि स्तुति, अजर, अमर, अबिनासी ।
निरालम्ब सब के आधारा, चेतन धुन सुखरासी ।
गो गाचर जहाँ लग मन जाई, सो नही देश तुम्हारा ।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई वरने पारा ।

मैंने क्या समझा ? दाबा कोई नहीं वह गुरु कौन है जो सत असत से परे है, जिसको मन, वाणी नहीं जा सकती, जिसकी इतनी प्रशसा कीगई है । इसका पता मुझे तब लगा जब मुझे यह यकीन हुआ कि मेरे अन्दर जा कुछ शकलें या गुरु रूप बनता है, बातें होती व ख्याल हाते हैं यह मेरे अपने ही मन को कल्पना, विचार और विश्वास था यानो वो तो मेरा अपना ही मन था तो फिर मैं मन को छोड़ कर आगे जाता हूँ आगे प्रकाश और शब्द है जो चीज प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वो सत भी है और असत भी है

वह उससे परे है वो सगुण भी है निर्गुण भी है मगर दोनों से अलग है वह साक्षी है वही शब्द को सुनती है, वही प्रकाश को देखती है और मन के चक्र को देखती है। वह जो चीज है वह हमारे अन्दर सच्चा सतगुरु है उसके यह गुण प्रशंसा हैं। वह कौन है ? वह तुम्हारे से भिन्न नहीं है वह तुम आप ही हो, वह तुम्हारी अपनी जात है, तुम हो तो सत हो आप देखते हो सत हो, उसको छोड़ दो तुम आप ही असत हो जाते हो। ऐ इन्सान ! जो कुछ है तेरी अपनी ही जात है, तेरा जपना ही आपा है, तू अज्ञान में भटक कर दूसरों के अधीन हुआ है कभी देवी के पीछे फिरता है, कभी देवता के पीछे फिरता है कभी किसी के पीछे फिरता है जब कि तेरी अपना जात ही व तू आप ही उस परम तत्व पूर्ण की अंश है। जहाँ तक सन्त पहुँचे हैं यह उनकी खोज है।

इसी ख्याल को लेकर स्वामीजी ने लिखा है :——" संत ईश्वर परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं ,,। ऐसा क्यों कहा ? इस तजर्बे के आधार पर कि उनका अपना आप जो था वो सत और असत का साक्षी था इसलिए कि तुम हो तो तुम्हारे अन्दर प्रकाश नजर आएगा अगर तुम नहीं हो तो न शब्द है न प्रकाश है तुम हो तो तुम्हारे अन्दर रोशनी आ जायेगी और मन भी आ जायेगा इसलिए उन्होंने कहा है कि संत ईश्वर और परमेश्वर को पैदा करने वाले हैं मैं इससे भी आगे जाता हूं। मैं कहता हूँ कि अगर भाई कोई आदमी यहाँ तक जाता है। इतना पहुच भी गया तो क्या वह कुछ कर सकता है ? अगर वही ठीक है तो राधास्वामी दयाल स्वयं बीमार क्यों हुए अपनी बीमारी क्यों नहीं दूर कर सके ? यह मेरी खोज है। मैं क्या समझता हूँ वह जो वस्तु हमारे अन्तर है वह उस परम तत्व की एक किरन है वह न कुछ करती है न कर सकती है (करने वाला मन है) वह केवल साक्षी है यानि देखती हूँ, आधार है इसके हाथ में कुछ नहीं। बाकी जो कुछ इस संसार में

हमको मिलता है यह हमारे अभने कर्म हैं। लाख इन्सान वहाँ पहुच जाये और अपने आप को कह दे कि मेरी जात ईश्वर परमेश्वर को पैदा करने वाली है मगर जबउसको शारीरिक कष्ट होगा मुसीबत आयेगी वो इसका सारे का सारा ज्ञान व्यर्थ हो जायेगा । इसलिए मैंने तालीम को बदला है कि ऐ इन्सान ! तू तो इस दुनियाँ में रहता है अपने अमल तथा कर्म को ठीक कर इन्सान इस ख्याल में न रहे कि मैं शब्द योग करता हूँ और मैं इतना ऊँचा चढ़ जाता हूँ कि उस आने आप तक जाता हूँ जैसा कि यहाँ यह लिखा हुआ है। लेकिन जब वह शरीर में आयेगा कष्ट होगा। जिससे बड़ो बड़ो को नानी याद आजाती है।

अभ्यास केवल इसलिए कराया जाता है कि इन्सान को पता लग जाय, उसका भ्रम चला जाएगा कि मैं कौन हूँ। ब्रहम चला गया। क्या पता लग ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूं वह एक शक्ति है। वह शक्ति क्या है ? मुझे पता नहीं। मैं केवल उस शक्ति की किरन हूँ बल्कि मैं तो यह समझूंगा कि मैं किरन भी नहीं। जब हवा होती हैं उसमें जो चेतनता होती है इससे सुरत पैदा होती है लोग कहते हैं कि आत्मा, अजर, अमर, अविनाशी है मैं नहीं मानता। अगर आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है तो वह हमेशा सुख दुख लेता रहेंगा क्योंकि आत्मा जन्मलेता तथा मरता रहेगा यह बात वही कही है। मैंने यह समझा कि जिन्दगी एक चेतन का बुलबुला है।

इस आधार पर मैंने काम किया है क्या काम किया ? कि भाई अपगी जिन्दगिओं को बनाओ। घृणा, द्वेष, इर्ष्या, कीना मत रखो। एक दूसरे के काम आओ तुम्हारे ख्याल में बड़ी ताकत है मैंने अभ्यास कर करके देखा है। अब मैं अपनी आत्मा से पूछना हुँ फकीरचन्द ! अगर तू इतना ऊँचा चढ़ गया कहता है कि तू अनामी धाम में पहुच गया तुम्हे जब शारीरिक कष्ट होता है तो तू अपने

शरीर की बीमारी और दुख को दूर नहीं कर सकता ? मैं न सही क्या और सन्त कर सकते हैं ? मैंने आपको बताया कि राधास्वामी दयाल जिन्होंने यह पंथ चलाया वो पिछले दो वर्ष सख्त बीमार रहे। और सन्तों का क्या हाल हुआ। मेरे गुरु महाराज की धाम उजड़ गई। २० दिन वो भी सख्त तकलीफ में रहे। तो मेरे दिल में ख्याल आता है कि हकीकत व सचाई क्या है ? सचाई यह है कि इन्सान एक परम तत्व है परमतत्व क्या है ? किसी को पता नहीं। उसकी एक अंश है इस शरीर में कुदरत के कारण आई है लोग कहते हैं हम आप नहीं आये कैसे आगया ? उसकी लीला का न किसी सन्त को पता लगा, न किसी ऋषि मुनि को पता लगा। जिसको जितनी जितनी समझ आई उतनी वो कह गये। जहाँ तक मेरी अपनी समझ है वो यह है कि हम इस दुनियां में रहते हैं हमको जो कुछ मिलता है हमारा अपना ही ख्याल और अपने ही कर्म का फल मिलता है अगर आप कर्म नहीं मानते तो फिर यह मानो कि जिसने यह संसार उत्पन्न किया है वह बड़ा जालिम है।

ऐ इन्सान उस खुदा के नाम पर जो तुमने इन्सानी नस्ल को बांट दिया है तुम्हारे आपस में झगड़े हैं, दर हकीकत खुदा के नाम पर झगड़े नहीं हैं यह अपनी इज्जत, मान और दौलत के लिए हैं लेकिन बहाना मजहब का है अगर मजहब का ही झगड़ा होता तो मुसलमान देशों में झगड़े न होते। तो यह क्या है ? इन्सान इस दौलत, इज्जत और मान की हवस में नाम हम धर्म का लेते हैं आपस में लड़ते हैं और यही हमारी मुसीबत का कारण बना हुआ है यही मैंने समझा है।

कल एक आदमी मेरे पास आया वह कहता था कि यहाँ हिन्दू परिषद सम्मेलन हुआ था हिन्दू सम्मेलन में एक व्यक्ति ने भाषण दिया कि मानवता मन्दिर का जो संचालक पंडित फकीरचन्द है यह हिन्दू जाति का शत्रु है उसने यह कहा। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीरचन्द ! तू शत्रु क्यों है ? मैंने उससे पूछा कि उसने दुश्मनी का कारण क्या बताया ? उसने बोला जी शिशु केन्द्र में बच्चों को इस शर्त पर लेता है कि जिसके तीन बच्चों से

ज्यादा बच्चे पैदा न करें। हानि क्या है ? यह परिवार-नियोजन केवल हिन्दू अपनाते हैं दूसरी जातियों में नहीं है। कोई भी जाति परिवार नियोजन की जिम्मेदार नहीं है। इसलिए कुछ देर के बाद हिन्दू तो कम हो जायेंगे और यह दूसरी जातियां बहुमत में आजायेंगीं। तो आम हिन्दू जाति दूसरी जातियों के अधीन हो जायेंगी। इसलिए उसने मुझको हिन्दू जाति का शत्रु कहा। अब मैं सोचता हूं क्या उसने ठीक कहा राजनैतिक दृष्टिकोण से उसने शत प्रतिशत ठीक कहा इसमें कोई झूठ नहीं मगर इस प्रकार के झगड़ों को पैदा करने का जिम्मेदार कौन है ? यह हकूमत है क्योंकि इस प्रजातन्त्र में वर्तमान Syslem of elechin के कारण ही यह ख्यालात पैदा होते हैं। अगर System of elechin ठीक हो तो कभी यह melborF पैदा न हो अत: बच्चों को दाखिल करने की शर्त मैं बन्द कर दूंगा। मैं हिन्दू जाति का शत्रु नहीं हूँ और नहीं किसी दूसरी जाति का शत्रु हूँ मेरे लिए सभी एक हैं मैंने तो यह काम बेहतरी के लिए किया था कि जितने ज्यादा बच्चे होते हैं उतने ही माता पिता को मुसीबतें उठानी पड़ती हैं मगर खैर मैं सचाई से यह कहता हूं कि जब तक यह प्रजातन्त्र में वर्तमान System of elechin है यह वर्तमान राजनैतिक दल है जो इच्छा हो करलें इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा मुसीबत व तवाही ही अवस्य आएगी कोई शक्ति रोक नहीं सकती कभी भी श न्ति की आशा न रखो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा और इस ख्याल के उसूल को समझ कर मैंने यह 'इन्सान बनो' की आवाज उठाई है कि हर प्रत्येक इन्सान अपने मन के ख्यालात को शुद्ध करे और नफरत, द्वेष, बुग्ज, हसद, कीना इनको छोड़े। अब आप देखो यह हिन्दू संगठन सम्मेलन क्यों हुआ ? सिक्ख खालिस्तान मांगते हैं उनके बराबर में अब हिन्दू खड़े हो रहें हैं यह हमारा हकूमत का तरीका इतना खराब है कि इसने ऐसी मुसीबतें लानी हैं जो कि ध्यान से बाहर है अब देखो यह कहते हैं कि जो अधर्मी और दूसरे का आपस में इत्तफाक व मेल हो जाये मगर यह जो चाहें मर्जी कर लें यह नही हो सकता क्यों ? अधर्मियों को तुम तालीम दो सब कुछ दो मगर जब तक तुम Seats reserve रखोगे तो लायक

आदमी काम करने वाले है उनसे वो जो कम लायक हैं। ऊपर चढ़ जायेंगे तो तुम कैसे आशा करोगे कि उनके दिलों में यह गुस्सा नही आएगा जो चाहे मर्जी कर लें यह Psychology है। अफ़सोस है मुझे अपने ख्यालात को व्याख्यान करने का तरीका नहीं आता मगर मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ मैं चाहता हुँ कि मेरी यह आवाज हकूमत तक आये इस बर्तमान System of election से जो कुछ यह हो रहा है आप देखना कि हिन्दुस्तान में क्या होता है और हमारे लोगो का क्या हाल है मैं ऐसा क्यों कहता हूँ क्योंकि मैं सब दर्जे पास करके उस गुरु के रूप तक पहुँच चुका हुं जिस गुरु की स्तुति यह गायी गई है और जो इस रास्ते में चलने से मुझको ज्ञान व अनुभव हुआ है उसके आधार पर मैं यह अपना जाती तजुर्बा कहता हूँ कि ख्याल की शक्ति है जैसा तुम सोचोगे वैसा फल होगा नफरत करोंगे नफरत मिलेगी प्रेम करोगे प्रेम मिलेगा द्वेष करोगे द्वेष मिलेगा, दूसरों का हक खाओगे तुम को देना पड़ेगा यह मैं नहीं कहता कि जो कुछ मैंने कहा यह अन्तिम है मगर मेरा जिन्दगी का बहुत बार अजमाया हुआ यह तजुर्बा है और क्योंकि जो कुछ मैं अनुभव करत. हुँ वो ठीक निकलता है इसलिए मुझे ऐसा कहने का हौसला है इसी हौसले के आधार पर शान्ति प्राप्त करने के लिए इन्सान को क्या करना चाहिये।

दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विबेका।

यह करना चाहिए। अगर शान्ति है तो केवल यहाँ है कि एक मालिक परम तत्व है शान्ति के लिए उस एक मालिक को मानो। हम उसकी किरण हैं जब तक जिन्दिगी है उसका सहारा पकड़ो। फकीरचन्द या किसी और गुरु कासहारा नहीं या राम या कृष्ण का सहारा नहीं बल्कि जिस परम तत्व का सहारा पकड़ो जब तक ब्राह्यमुखता है इन्सान का विचार ब्राह्य मखी है इस दुनियां की शान्ति कहीं भी नही। जाग्रत और स्वपन में सुख और दुख दोनों रहेंगे अत: अन्तर मुखी होकर अपने आपको उसके समर्पित करते रहो मगर उसका सहारापकड़ने व लेने के लिए सबसे पहले तुमको शब्द योग करना चाहिए मैं मालिक से मिलने निकला था मालिक का पता

लग गया। वह मालिक क्या है ? वह एक आधार हूँ परमतत्व है समझ बूझ और अकल के साथ भक्ति करो दुनियाँ में जीते हो तो भी अकल के साथ जीओ ।

र धास्वामी चरन श रण बलिहारी, रहुं शब्द मिल एका

अगर कोई शान्ति का मार्ग हें तो केवल शब्द योग क्योंकि जिस शक्ति से शब्द निकलता है वह तत्व है उसे चाहे अकाल कह लो न मी कह लो, वह कुछ है ।

नोट :—आत्मा हमारा तो Self है जो प्रकाश में रहता है हमारा प्रकाश मय होना हमारा आत्मापन है जो प्रकाश है उसका काम फैलना है अतः जब तक हम प्रकाश में हैं वो जो हमारा आत्मारूपी प्रकाश है वो कभी कहीं जायेगा, कभी कहीं जायेगा। जो आत्मा है उसका जन्म लेना अनिवार्य है क्योंकि जो प्रकाश है यह फैलेगा। सुरत वो चीड़ा है जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनादी है।

प्रार्थना

चरन शरन की वन्दना, नित कोई और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ॥
तेरी शरनागत हुआ फिर, किसकी राखूँ आस।
आसा तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ॥
रूप ध्याऊँ नाम गाऊँ, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय ॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से भाग पूरन जाग ॥

भाग्य को सराहतो रही ईश्वर ने उसको सविनय प्रार्थना को स्वीकार मी कर लिया। मैंने शास्त्रोक्त उसका क्रिया कर्म किया और उसके तेरहवें दिन एक निर्मल साधु का चेआ होकर विचरने लगा। अब तक इसी प्रकार जीवन यात्रा को पूरा करता रहा हूं। यही मेरी कहानी है। मुझको साधु होने का पहिला और सच्चा उपदेश मेरी स्त्री ही ने दिया था। जान पड़ता है कि उसके साथ मेरा विवाह केवल मेरे उद्धार और कल्याण ही के निमित्त हुआ था। मुझमें उसकी बात की श्रद्धा थी इसलिये उसी दिन इस श्रद्धा ने अपना काम किया और मैं बात की बात में कुछ का कुछ हो गया।

यह एक साधारण कहानी है परन्तु इससे तुमको श्रद्धा का उत्तम उपदेश मिलता है। आज की रात के लिये यही कथा बहुत।

———

मंगल का दिन और स्वामी मंगलानन्द की कहानी

दूसरे दिन स्वामी मंगलानन्दजी ने इस प्रकार अपना उपदेश आरम्भ किया—

मंगल एक तारे का नाम है जो बल, पौरुष, भलाई और शुभ शकुन के लिये प्रसिद्ध है। यह दिन विशेषरूप से उसी के नाम से विख्यान है। बल वह है जिसमें भलाई का गुण और संस्कार हो। जिसमें बुराई हो वह निर्बलता है। जो नेकी करता है वह बलवान है, क्योंकि उसमें शान्ति, आनन्द निर्भयता होगी जो बुराई करता है वह बड़ा ही बलहीन है क्योंकि उसमें अशान्ति, भय और लज्जा होगी। नेक मनुष्य निश्चल और बुरा मनुष्य चंचल होता है तुम जिस प्रकार से चाहो, इन बातों को परख देखो। जो सताने वाला है, दूसरों

को सताता है। वह बलहीन, वीर्यहीन, पुरुषार्थ हीन होने के अतिरिक्त चिड़चिड़ा और क्रोधी भी होगा और यह सब निर्बलता के लक्षण हैं। इनके विरुद्ध जो नेक हैं वह बलवान वीर्यवान और पुरुषार्थी होंगे वह प्रसन्नचित्त, सुशील और सहनशील होंगे। यह सब गुण बलवान ही में होते हैं। तुम हमारी बातों पर न जाओ किन्तु आप इन कही हुई बातों पर विचार किया करो तब तुमको सचाई का बोध होगा।

मंगल संस्कृत धातु 'मगि' से निकला है जिसका अर्थ 'चलना'। चलना फिरना शक्ति का प्रबोधक है हवा चलती है अग्नि जलती है, पानी की धारा बह रही है। इन सब में क्रिया (हरकत) है। तुम देखते हो, इनकी क्रियात्मक शक्ति का कहीं ठिकाना है? हवा बड़े-बड़े वृक्षों और ऊँचे-ऊँचे महलों को बात की बात में गिरा देती है अग्नि सबको जलाकर मटियामेट कर देती है पानी की हलकी और धीमी धार पहाड़ों तक की जड़ को खोद कर गिरा देती है। इनमें ऐसा बल क्यों है? क्योंकि इनमें क्रिया का प्रवाह नियम से कार्य कर रहा है। और जहाँ क्रिया होगी वहाँ स्वयं शक्ति का अभ्यास होता रहेगा। यह स्वतः सिद्ध है। सम्भव हैं तुम कहो कि ऊपर के दृष्टान्त में वायु अग्नि जल से विनाश होता है। विनाश पाप है इसलिये निर्बलता कमजोरी है फिर इसमें बल कैसे आया? उसका उत्तर यह है कि अग्नि, वायु और जल कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाते क्योंकि हानि को वहाँ हानि के अर्थ में समझना चाहिये जहाँ स्वार्थ साधन और केवल स्वलाभ ही आदर्श हो, किन्तु वायु, अग्नि और जल के कारण यह भी जो कुछ काम संसार में होते हैं वह सर्व साधारण के लाभ ही के हैं हां इनकी समझ न हो यह दूसरी बात है।

इस मंगल में दो बातें हैं क्रिया और नेकी, बल और भलाई यहाँ तक कि स्वयं ईश्वर का नाम ही मंगल और मंगलकारी समझा जाता है। 'मंगलम् भगवान को भी विष्णु मंगलम् गरूड़ध्वजं मंगलं पुण्डरीकाक्षं मंगलाय तनो हरि।"

सज्जनो कल मेरे भाई निर्मलानन्द ने अपनी कहानी जो सुनाई थी उसमें उसने श्रद्धा की मुख्यता दिखलाई थी। वास्तव में यदि श्रद्धा न हो तो कुछ भी नहीं हो सकता। यदि वह अपनी स्त्री पर श्रद्धा न करता तो फिर न नेकी की ओर झुकता और न इस संसार के जाल से छुटकारा पाता। वह श्रद्धा पहिले चन्द्रमा के प्रकाश के ऐसी होती है और फिर धीरे धीरे बढ़ती भी है मैं इसके रूप को और भी स्पष्ट रूप से समझाये देता हूं। आप समझिये। कोई मनुष्य किसी वाटिका में गया और माली को वाटिका के काम में लगा हुआ देखकर पूछने लगा, 'तुम कोई ऐसा यत्न बताओ कि मैं अपने घर में गुलाब का पेड़ लगाऊँ और उसमें सुन्दर सुन्दर फूल आजायें' माली ने कहा' 'हम तुमको गुलाब की दो टहनियाँ देते हैं यह माघ का महीना है। तुम इनको ले जाओ, जहां लगाना चाहो वहां पृथ्वी खोद कर इनको उसकी मिट्टी में गाड़ दो। कभीं कभी मिट्टी को पानी देते रहना आप इसमें पत्ते निकलेंगे। और फिर समय पर फूल भी आजायगे' उस मनुष्य ने माली की बातों पर श्रद्धा की। जैसा कहा गया था उसने वैसा ही किया और देखो थोड़े ही दिनों पीछे उन टहनियों में दो दो पत्ते निकले। नन्हीं नन्हीं शाखायें निकलीं और कलियाँ भी आगईं। सच मुच बड़े बड़े गुलाब के गुलाबी रंग के फूल खिल गये। यह श्रद्धा और विश्वास का फल है। जिसको धर्म पर श्रद्धा नहीं होती वह जीवन पर्यन्त इधर उधर मारा मारा फिरता है। उसका जीवन धर्म का जीवन नहीं होता। यदि हमारे ऐसा मनुष्य माली से बाद विवाद करने लग जाता और उससे छेड़ छाड़ करके कहता कि 'इन टहनियों में जड़ नहीं है और न पत्ते हैं रंग है न रूप है। यह तो लकड़ी हैं और केवल जलाने ही योग्य हैं। इनसे रंगीन और सुन्दर फूलों का निकलना असम्भव है' तो वह मनुष्य जीवन पर्यन्त अपने घर में खिला हुआ गुलाब कदापि न देखता इसी प्रकार जो व्यर्थ वाद-विवाद में अपना समय नष्ट करते हैं और श्रद्धा विहीन होते हैं उनके हृदय में कभी भी भक्ति भाव का अंकुर नहीं निकलता निर्मलानन्दजी ने अपनी स्त्री की बातों पर विश्वास किया और उसका परिणाम वह हुआ जो उसने तुम्हारे समक्ष वर्णन किया है।

जब श्रद्धा उत्पन्न होती है तो उसके साथ साथ शुभ शकुन और विशेष प्रकार के मंगल और आनन्द की अवस्था आती है जो श्रद्धावान को उसी प्रकार मिलती है जैसे सोमबार के पीछे मंगलवार मिलता है।

इस मंगल के दिन हमको श्रद्धा संयुक्त होकर बलवान होने और नेक बनने का विचार करना चाहिये। बल जीवन है और बल के अभाव ही में मृत्यु है। भलाई में बल और बुराई में अबलता है। यह बात हम ऊपर कह आये है इसी को बार बार क्यों कहते रहें।

परन्तु प्रश्न यह है कि हम 'नेक' और 'बलवान' कैसे बने उत्तर यह है कि प्रयत्न करो, अभ्यास करो। क्रिया और अभ्यास कैसे किया जाये ? कहीं जाकर सत्संग करो। सतसंग ही यहाँ सच्चा तीर्थ है। इस तीर्थ में नहाने धोने और जल पीने से मन, बचन कर्म शुद्ध और पवित्र होते हैं। मनकी शुभ कामना पूरी होती है। यही शुभ कामना श्रद्धा के साथ मिलकर शुभ भावना उत्पन्न करेगी। यही शुभ भावना पुत्र है जो तुम्हारी सद्गत का कारण होगा। शास्त्र कहते हैं 'जिसके पुत्र नहीं होता उसकी मुक्ति नहीं होगी।' इसी प्रकार हम कहते हैं कि 'जिसमें शुभ भाव नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती' सतसंग के तीर्थ से मनुष्य का जीवन बहुत ही जल्द सुधर जाता है और वह अपने आदर्श को इसी जीवन में प्राप्त कर लेता है। इस पर हमको मंगल के दिन विचार करना चाहिये।

बहुत सी हिन्दू स्त्रियाँ मंगल का व्रत रखती हैं। उस दिन जो कथा वह कहती हैं वह हम तुमको सुनाते हैं। इन कहानियों पर तुमको हँसना नहीं चाहिए। यदि उपदेश कहीं से मिलता है तो वह हर जगह से मिलता है। सोचने और विचारने के लिए बातें हर जगह पाई जाती हैं।

—×—

शब्द

ध्यान मूलम सत गुरू, और मूर्ती विश्वास है ।
मूर्ती को पावे भुरती, वही गुरू का दास है ।।१।।
बिन विश्वास मिलता नहीं, होता नहीं परकाश है ।
गुर मुख को आनन्द है, जाता नहीं निराश है ।।२।।
एकान्त बैठे ध्यान में, जपता सुवासों साँस है ।
गुरु का रंग प्रगट करे फिर, आनन्द बाराह मास है ।। ।।
गुरु सेवा में मरजाइये, फिर जीने की आस है ।
जो जीता ना मरे, झूठी उसकी तलास है ।।४।।
सुरत शब्द साधन सुगम, साधन इसका बास है ।
नाथूराम यह सत्य है गुरू चरण विश्वास है ।।५।।

शब्द

सतसंग में नर नारी आवें, आनन्द गहरा पावेंगे ।
ज्ञान ध्यान की चर्चा होती सुख सागर में नहावेंगे ।।
सन्तों का सन्देश सुनेंगे, मीठी बानी गावेंगे ।
सुफल है जीवन उनका, गुरु से प्रेम लगावेंगे ।।
जन्म मरण का खटका, मिटजा आबागमन मिटावेंगे ।
सतसंग की जो निन्दा करेंगे, अपना धर्म घटावेंगे ।।
नाथूराम हैं गुरु चरण में, अमृत बचन सुनावेंगे ।
सन्त दयाल दया के सागर, सागर में मिल जावेंगे ।।

मंगल

अब लग पड़ी न पिछाण भूल में मैं खड़ी ।
कर सन्तों का सतसंग गुरूजी से जा भिड़ी ।।
गुरु मोहि मिला दयाल पकड़ रस्ते करी ।
अब न छोड़ूं राह दई है अमर जड़ी ।।
पकी पड़ी है पिछान साँच पर मैं खड़ी ।
मिले गुरु नाथू राम मामराज भूले न घड़ी ।।

संगी भाई, पोते, परपोते जिन्होंने नाम की प्राप्ति करली है और कर रहे हैं। जो कोई इस नाम को किसी महापुरुष द्वारा प्राप्त करके सोधेगा, वह नाम की प्राप्ति कर लेगा।

इस समय सोधा हुआ 'राधास्वामी' नाम ही तुमको लक्ष की प्राप्ति करा सकता है। इसकी परीक्षा तुम 'निर्वाण' 'ए ए'-ने ने' 'अल्ला' 'राम' वाह गुरु' व 'राधास्वामी' नाम उच्चारण कहके अनुभव करो। तुमको दूसरे नाम के उच्चारण करने कोई शक्ति लगती हुई नहीं प्रतीत होगी। मगर 'राधास्वामी' नाम उच्चारण करोगे तो तुमको शक्ति लगती हुई प्रतीत होगी और ऐसा मालूम होगा कि तुम्हारे मन से मैल 'राधास्वामी नाम' के मुगरे की चोट खा खा कर वैसे ही निकल रही है जैसे कपड़े से मैल, लकड़ी के मुगरे से चोट खाकर निकलती है। हल्का बोझ ले जाने में तुम्हारी कम शक्ति एकत्रित होगी और भारी बोझ ले जाने में अधिक शक्ति एकत्रित होगी। राधास्वामी नाम लेने पर तुम्हारी शक्ति सबसे अधिक एकत्रित होगी। इस नाम के सुमिरन करने से तुम्हारा शरीर स्वस्थ होगा। ध्यान करने से तुम्हारी मानसिक शक्ति प्रबल होगी और भजन करने से आत्मा के बोध भान से रहित हो जाओगे। इन्ही को त्रिय ताप कहते हैं। इसके बाद नाम की प्राप्ति हो जाएगी। जिसको अनामी कहते हैं। नाम की महानता कही नहीं जा सकती इसको सन्त तुलसी-दास जी इस प्रकार कहते हैं।

विधि हरिहर कवि कोविद वानी, समुझत गने न जात बखानी।

सन्त कबीर साहेब इस प्रकार कहते हैं।

सात समुन्द्र की मिसी करूँ, लखनी करूँ बन राय।
सब धरती कागज करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय॥

मैं कहता हूं—सात समुद्र की मिली करूँ, लखन करूँ बन राय।
सब अकास कागज करू, गुरु गुन लिखा न जाय॥

स्मरण रहे कि गुरू और नाम एक ही तत्व है, ऐसा क्यों कहते हैं?

लोहा सोधने पर मिस्त्री के गुण व प्रभाप व प्रभाव ग्रहण करके अस्त्र बनने ही पर काम करता है। कपड़ा सोधने पर दर्जी के गुण व प्रभाव को

महात्मा बुद्धदेव ने नाम का 'अनुभव' 'निर्वाण'अवस्था तक किया और इसका प्रचार 'निर्वाण' शब्द द्वारा सोध कर किया। ईसामसीह ने नाम का अनुभव करके 'aye aye' 'nye nye' 'हां हां' 'नहीं नहीं' कहा। जिसका अर्थ है कि तुम जहाँ तक अस्तिवत् का अनुभव 'हाँ हाँ' कर के करते हो वह नाम नहीं है। इसका प्रचार गौड God शब्द द्वारा सोध कर के किया। हजरत मुहम्मद साहेब ने नाम का अनुभव करके कहा 'ला अल्ला' वहाँ अल्ला नहीं है और इसका प्रचार अल्ला शब्द द्वारा सोधकर के किया कबीर साहेब ने नाम का अनुभव करके कहा 'जहाँ पुरुष तहाँ कछऊ नाहीं, कह कबीर हम चीन्हों और राम शब्द द्वारा सोध कर इसका प्रचार किया। अपने सोधे हुए राम नाम का संकेत वह निम्नांकित दोहे में करते हैं।

एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घट घट में बोले।
एक राम का सकल पसारा, एक राम है, सबसे न्यारा॥

वह संकेत करते हैं कि 'राम' से हमारा अभिप्राय न तो उस राम से है, जो दशरथ के लड़के थे, न उस राम से है, जो जीवजन्तु में व्यापक है, और न उस राम से है जो ऋषि की रचना को विनाश करता है। हमारा तो आशय उस राम से है या परमतत्व से है, जो इन तीनों यानी देह, मन व आत्मा से परे की अवस्था में व्यापक है जिसको चौथा पद कहते हैं। नानक साहेब ने नाम का अनुभव करने पर उसको 'वाह गुरू' कहा। 'वाह' महान को कहते हैं और गुरुतत्व को कहते हैं और वाह गुरू शब्द द्वारा नाम सोध कर प्रचार किया। संत तुलसीदास ने नाम का अनुभव करके कहा राम से अधिक नाम प्रभुताई, राम न सकहिं नाम गुण गाई नाम को राम द्वारा सोध कर प्रचार किया 'पलटू साहब ने नाम का अनुभव करने पर कहा 'पलटू वहां का बासी, जहां बसे नहिं अविनासी। और नाम का राम शब्द द्वारा सोध कर प्रचार किया। स्वामीजी ने नाम का अनुभव करके कहा। राम, रहीम, करीम न केशों। जहां नाम है, वहाँ कुछ नहीं है। इसका अनुभव हजूर महाराज ने किया और 'राधास्वामी' नाम द्वारा सोध कर नाम का प्रचार किया। इस 'राधास्वामी' नाम द्वारा हजूर महाराज के बहुत से सत-

है। जिसकी पहली कड़ी 'काहे बौराना हाय रे फकीरवा' तुम पूछ सकते हो, कि जब एक ही बार नाम लेना प्रयाप्त है, तो हमको सुमिरन, ध्यान वो भजन करने की क्या आवश्यकता है ? इसका उत्तर यह है कि एक बार नाम लेना महापुरुषों को प्रयाप्त है जिन्होंने नाम की प्राप्ति नहीं किया है, उनको तीनों करना अनिवार्य है। जिससे उनको नाम की प्राप्ति का अधिकार प्र प्त हो। और वह नाम की प्राप्ति कर ऐसा करें।

जिस नाम की महानता कबीर साहेब ने कमाल साहेब को और दाता-दयाल ने परमदयाल साहेब को समझाया वह कौनसा नाम है।' वह सन्त-जनों का सोधा हुआ नाम है। सन्त जन नाम को किस रसायन में सोधते हैं। वह सुमिरन, ध्यान और भजन द्वारा शब्द वो प्रकाश के रसायन में सोधते हैं। सोधे हुए नाम में क्या व्यापक रहता है। उसमें सन्तों का लक्ष व्यापक रहता है। यह आश्चर्य की बात है।

बीज दिया है वृक्ष में, यह देखे सब कोय।
बीज छिपा है वृक्ष में, विरला देखे कोय॥

गर्मी का दिन है। हम और तुम दोनों पैदल यात्रा कर रहे हैं। धूप की तपन से व्याकुल होगए। सामने थोड़ी दूर पर एक बरगद का वृक्ष दृष्टिगोचर हुआ। हम लोग उसकी छाया में बैठ गए। धूप की तपन बुझ गई। तुमने बरगद के विशाल वृक्ष और बीज दोनों को देखा। वृक्ष की ओर आकर्षित हुए। बीज को देख कर आँख मीचली। हमने भी बड़ के वृक्ष व बीज को देखा। हमको बड़ का बीज उसके वृक्ष से विशाल प्रतीत हुआ। हमने उसके एक बीज में उसके अनेक वृक्षों को देखा। इसके हेतु हमने बीज को सोधा कैसे ? हमने वृक्ष के बीज को भूमि में गाड़ दिया और सींचना देख भाल करना प्रारम्भ किया। साहस, धीरज और सतोष से काम लिया। समय आने पर वह बीज बरगद का विशाल वृक्ष बन गया। वह वृक्षों का सरदार तथा जंगल का राजा होगया। एक बीज से उस बरगद में इतने वृक्ष पैदा होगए कि जिनकी गणना नहीं हो सकती। इससे हमारा आशय यह है कि बीज में बरगद का वृक्ष और मंत्र में महापुरुष का लक्ष व्यापक है।

प्रत्येक में व्यापक है, परन्तु जब तक साधन द्वारा उसको प्रगट करके उपयोग न किया जाय, तब तक उसका होना और न होना बराबर है।

अत यह अंक नाम की महानता का है।

परम सन्त कबीर साहेब के सुपुत्र कमाल साहेब नित्य प्रातःकाल गंगा स्नान को जाते थे। वे एक दिन जब घाट पर पहुँचे तो देखा कि एक व्यक्ति गंगा में डूब कर प्राण देने की तैयारी कर रहा है। उन्होंने कहा भाई क्या कर रहे हो। उसने उत्तर दिया, सन्तजी कुष्ट रोग से व्याकुल होगया हूं, सिवाय डूब कर प्राण त्यागने के और कोई औषधि नहीं दिखाई देती है। कमाल साहेब ने कहा 'सतनाम' प्रत्येक रोगों की औषधि है। तुम तीन बार 'सतनाम' लेकर तीन बार गंगा में डुबकी लगाओ। कुष्ट रोग से मुक्त हो जाओगे। उसने कमाल साहेब के वचन का विश्वास करके तीन बार 'सतनाम' लेकर तीन वार गंगा में डुबकी लगाई और वह कोढ़ रोग से मुक्त होकर जवान बन गया। लोगों को आश्चर्य हुआ और इसके हेतु कबीर साहेब से कमाल साहेब की प्रशंसा किया। कबीर साहेब प्रसन्न होने के बजाय दुखी होगए। और खेद प्रगट करते हुए कहा कि बूड़ा वंश कबीर का, उपजा पूत कमाल' इस वात को लोगों ने कमाल साहव से कहा, तो कमाल साहेब ने अपने पिता को 'सतनाम' कहकर उनके दुःख का कारण पूछा। कबीर साहेब ने कहा, तुमने 'सतनाम' की महानता को डुबो दिया। उस कोढ़ी को तीन बार 'सतनाम' कहलाने की क्या आवश्यकता थी, केबल एक बार 'सतनाम' कहलवाना प्रयाप्त था। इसके बाद कमाल साहेब को 'सतनाम' की महानता समझ कर प्रचार करने को कहा।

परमदयाल साहेब बसरा बगदाद से दाता दयाल को प्रसन्न करने हेतु ताज, तख्त संतों का वस्त्र और फरसी (हुक्का) जो मूल्यवान थे लेकर उपस्थित हुए। इसको देख कर दातादयाल बजाय प्रसन्न होने के दुखी हुए। उस समय उनको ऐसा प्रतीत हुआ कि हमारी बोझी हुई नाव डूब गई। क्योंकि परमदयाल ने नाम की प्राप्ति अभी तक नहीं पाई। इसके हेतु अपना खेद उस शब्द में प्रगट किया और नाम की महानता परमदयाल को समझाया

रहता है सांसारिक व्यक्तियों की तरह वह काल वो माया के आधीन नहीं रहता। उसको अनुभव हो जाता है कि संसार उसकी परछाई है, अगर वह दौड़ेगा तो यह उसके साथ दौड़ेगी। अगर पकड़ना चाहेगा तो वह भाग जाएगी।

प्रत्येक प्रकार का धन जो तुम्हारे या किसी के पास है या जिसका तुम अनुभव कर सकते हो, वह सब नाशवान है। नाम ही एक धन ऐसा है जो अविनाशी है। अतः यथार्थ धनी वही हैं, जिसको नाम का धन प्राप्त है धन प्राप्त करने से तुम्हारा अभिप्राय क्या है। अचिन्ता, निर्भीकता वो शान्ति प्राप्त करना। संसारी धन प्राप्त करके तो तुम चिन्तित, अशान्त, भयभीत वा कायर बन जाते हो, जो धनी के लक्षण के प्रतिकूल है।

सरिता का जल निष्काम प्रवाहित रहता है। पेड़ निष्काम फलता है वो सतजन, निष्काम नाम धन अपना दान देते हैं। जैसे सरिता के जल से लाभ उठाने के हेतु, तुमको समीप उसके जाना पड़ता है। पेड़ के फल के हेतु तुमको उस पर चढ़ना होता है, वैसे ही नाम दान लेने के हेतु सँतजन की सेवा कर के उसको प्रसन्न करना आवश्यक है। यह सत्य है कि सन्तजन स्वयं में आकर्षित रहते हैं, मगर सच्चे भक्तों का प्रेम उनको आकर्षित कर ही लेता है। अगर तुम से सन्त जन वो वा सन्त सत्तगुरू प्रसन्न हो तो तुम नाम दान पाने के अधिकारी बन गए।

अतः हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि तुम नाम दान पाने के अधिकारी बनो और नाम की कमाई करके, इसकी मदिरा पीकर इसका आनन्द भोगो और दूसरों को अपना जैसा बनाओ। मालिक तुम्हारी सहायता करे।

'राधास्वामी'

नाम की महानता

नाम क्या वस्तु है ? इसका वर्णन मैंने भली भाँति नाम अंक में कर दिया है। उसके पढ़ने से तुमको उस समय तक कोई लाभ नहीं होगा, जब तक इसको समझ कर तुम में उससे काम लेने की शक्ति न आजावे। यद्यपि विद्या

है । काम तो वह अवश्य करता है । किन्तु वह उससे प्रभावित नहीं होता है लाभ हुआ तो क्या व हानि हुई तो क्या । वह सब कुछ करता हुआ, स कुछ भूला सा रहता है । उसको अपनी भलाई का ध्यान भूल जाता है । दूस की भलाई को अपनी भलाई समझ कर अपने ऊपर कष्ट सहकर उसकी भलाई में लगा रहता है और उसको न जीने की खुशी है न मरने का गम है। उसका जीवन एक रस हो जाता है । उसके मुख की कान्ति साधारण मनुष्यों से भिन्न होती है । जिससे शान्ति के साथ प्रकाश व तेज निकलता रहता है। उसमें आकर्षण शक्ति प्रगट हो जाती है । अचिन्तपना के कारण उसमें भीनी भीनी मधुरमस्ती आ जाती है । मदिरा की मस्ती तो घटती बढ़ती, चढ़ती उतरती रहती है और उसमें खुमार होता है । नाम की मस्ती सम अवस्था में रहती है । उसमें खुमार नहीं होता । उसको कोई लख नहीं सकता । किन्तु संत-सतगुरू अवश्य लख लेते हैं और उसको लख कर प्रसन्न होते हैं । नाम-धारी की अवस्था कमलनी र की रहनी कहलाती है । कबीर साहिब कहते हैं ।

कबीर, मतवाला नाम का, मद मतवाला नाहीं ।
मद मतवाला जो फिरे, सो मतवाला नाहीं ।।

नाम की महिमा मनुष्य के अन्दर में जहाँ अमृत का कुंड है, उससे शब्द योग द्वारा बताने की विधि संत जन और संत सतगुरु बताते हैं । जो मनुष्य इस कार्य में कुशल होता है, तो वह जब चाहता है अपने अन्तर में प्रगट करके पीता रहता है । ऐसा मनुष्य चाहता है, कि दूसरे लोग भी उसी की भाँति नाम की मदिरा अपने अन्तर में प्रगट करके पीते रहें और बिना खुमार की मस्ती का आनन्द भोगते रहें । वह ऐसे व्यक्तियों के खोज में रहता है जो उसके अधिकारी हों । मगर अधिकारी न मिलने से वह उदास रहता है ।

जिसको नाम की प्राप्ति हो जाती है, उसको नामी कहते हैं । जैसे चीनी वो मिठास में कोई अन्तर नहीं है, वैसे नाम और नामी में कोई अन्तर नहीं है । नामी को यह अनुभव हो जाता है कि इस जगत में जो कुछ दृष्टि गोचर होता है, वह उसके स्वयं का प्रतिविम्ब है । वह इस जगत के आश्रित नहीं है बल्कि यह जगत उसके सहारे है । वह काल वो माया पर स्वयं प्रभावित

कर रहा है। उसके करने हेतु बिबश है। मालिक की मौज उससे करा रही है। किसी बात के हेतु उसकी चिन्ता व्यर्थ है। वह सर्बाधार से मिलकर एक रहता है।

क्या तुमको पता है, कि दुःख वो क्लेश कहाँ है? तथा सुख व शान्ति कहाँ है। दुःख वो क्लेश, अपने स्वयं को भूल कर दूसरे से आकर्षित होने व प्रेम छूट कर मनुष्य को अपने स्वयं का अनुभव हो जाता है और वह अपने स्वयं में एकाग्र होकर उसी प्रकार लीन रहता है, जिस प्रकार सांसारी मनुष्य, द्वविम्द में लीन रहता है। काम वो नाम दो बस्तु नहीं है। यह एक ही तत्व है से संचालित है। जब-तुम्हारे चित्त की वृत्ति जाने या अनजाने अपने स्वयं को छोड़ कर बाहर के साँसारिक वस्तुओं से आकर्षित होकर उनसे प्रेम करने लगती है, तो छिन्न-भिन्न होकर निर्बल हो जाती है। फिर दुःख व क्लेश उठाने लगती है तथा काम कहलाती है। सन्त सतगुरू की दया से इस बृत्ति को जब स्वयं का अनुभव हो जाता है, तो वह सांसारिक वस्तुओं से उदासीन होकर अपने स्वयं की ओर आकर्षित होकर उससे प्रेम करने लगती है। इस एकाग्रता आने के कारण पुष्ट वो शक्तिशाली बन जाती है और सुख व शान्ति की अधिकारी बन जाती है। तब वह नाम कहलाती है।

नाम वह तत्व है, जो बृति को एकाग्र व शक्तिशाली बना कर आकाशी बना देता है। निष्काम, काम करने के तत्व को नाम कहते हैं। निष्काम काम की प्रतिक्रिया नही होती। सकाम, काम की प्रतिक्रिया होतीं है। और वह सदैव जारी रहती है और आवागमन में फसाए रहती है। यदि किसी ने सकाम रूप में संसार के प्रत्येक प्रकार के वस्तुओं का भोग किया और स्वर्ग में विलास किया किन्तु उसमें निष्कामता नहीं आई तो सब कुछ व्यर्थ व धूल है। कबीर साहेब इसका समर्थन इस प्रकार करते हैं।

नाम बिना बे काम है, छप्पन कोटि विलास।
क्या इन्द्रासन बैठना, क्या बैकुण्ठ निवास॥

जिसको नाम की प्राप्ति होगई है, उसको किसी प्रकार की कामना नहीं रह जाती क्योंकि नाम सभी कामनाओं का भंडार है। वह निष्काम हो जाता

पर चलने के हेतु सुरत-शब्द योग का वायुयान है जो सन्तों को छोड़कर दूसरे के पास नहीं है। संत-जन जब किसी अधिकारी को दया करके इस पर चढ़ा देते हैं, तो पहिले जीव ब्रह्म में लीन होकर विलीन हो जाता है। इसके बाद पार-ब्रह्म या सर्वाधार में लीन होकर विलीन हो जाता है। इस प्रकार जीव का ब्रह्म वो पार ब्रह्म या सर्वाधार का अन्तर समाप्त हो जाता है। और पूछ-ताछ खोज-खाज करना-धरना, कहना-सुनना सब भूल जाता है। काल वो माया या द्वविन्द की पोल खुल जाती है और इसे द्वविन्द संसार की स्थिति कि यह संसार काल माया के आधीन होने के कारण नाशवान है वो अस्थाई नहीं है, आँखों से प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगता है और संसार से मनुष्य को उदासीनता हो जाती है। संसार ही नहीं वह स्वयं अपने देह, मन और आत्मा को नाशवान समझने ब देखने लगता है।

जो शक्ति या तत्व इस पिन्ड, अन्ड वो ब्रह्मांड की श्रष्टि करती है और सम्हाले हुए है, उसको नाम कहते हैं। नाम के मार्ग पर चलने वाले व्यक्तियों की संसारिक, मानसिक वो आत्मिक कामनायें या तो स्वयं पूरी हो जाती हैं या दग्ध हो जाती हैं। नाम वह शक्ति या तत्व है जो मनुष्य के प्रत्येक प्रकार की द्वविन्द वासनाओं से छुटकारा दिलाकर निर्द्विन्द अवस्था प्राप्त करा कर सत्तलोक तथा उससे परे के लोकों में ले जाता है राम-राम वो खुदा खुदा या किसी अन्य नाम का जपना नाम नहीं है। नाम कहने सुनने या पढ़ने लिखने की बस्तु नहीं है, वह अपने अन्तर में अनुभव करके प्रगट करने की शक्ति या तत्व है। इसको प्राप्त करने के हेतु उत्साह धीरज वो मधुर यानी सम अवस्था की अटूट परिश्रम सुरत शब्द योग द्वारा संत सतगुरु के आदेशानुसार करना पड़ता है।

नाम मनुष्य के प्रत्येक प्रकार के भ्रमों वो शंकाओं को समाप्त कर देता है उसको वह अनुभव करा देता है, कि वह मालिकेकुल या सर्वाधार का अंश है मौज मालिक प्रकृति के रूप में उसके द्वारा, अपना खेल खिला रही है। उसके बस में कोई बात नहीं है। वह कुछ नहीं कर सकता, जो कुछ वह

नाम

लेखक --कुवेरनाथ श्रीवास्तव (बलिया)

जिस प्रकार किसी श्रोत से निर्मल वो स्वच्छ जल प्रवाहित होकर वाटिका में प्रवेश करके हरा-भरा और सुगंधित बन जाता है, तथा दुर्गन्धित स्थान में प्रवेश करके मैला वो अपवित्र बन जाता है। इस प्रकार दोनों दशा में अपनी निर्मलता वो स्वच्छता को समाप्त करके अपना रंग-रूप खोकर संकट में पड़ जाता है, उसी प्रकार आत्मा अपना निज घर छोड़कर सुरत द्वारा इस द्वविन्द ससार में प्रवेश करके दुःख-सुख का रूप धारण कर के अपने रंग वो रूप को खोकर संकट में पड़ जाती है। नाम वह मार्ग है और अस्त्र है, जिसके द्वारा आत्मा इस द्वविन्द जगत के दुःख-सुख भोगने को बोध-भान से रहित वो निर्लेप रहते हुए अपने निज घर में जहाँ से इस संसार में आया था, वहाँ प्रवेश करता रहता है और शरीर त्यागने के बाद सदैव के लिए उसमें लीन होकर विलीन हो जाता है।

आत्मा का प्रवाह सुरत द्वारा जब मस्तक, जिसमें आकाश है, ऊपर की ओर होता है, तब वह आकाशी वो निर्द्विन्द बन कर दुःख सुख का भान तजते हुए, अपने निज घर में प्रवेश कर जाता है। जब मस्तक के नीचे जिसमें पाताल या द्वविन्द है, की ओर प्रवेश करता है, तब पाताली या द्वविन्द बन कर वह दुख-सुख का भान करने लगता है। और द्वविन्द में फँस जाता है। इस द्वविन्द दशा से रहित होने और निर्द्वन्द दशा प्राप्त करने हेतु तुमको नाम के मार्ग पर चलना वो नाम का अस्त्र धारण करना होगा

नाम वह शक्ति या तत्व है, जिसको मनुष्य को अपने अन्तर में सुरत-शब्द योग द्वारा प्रगट करना पड़ता है। इससे उसकी आत्मा सुरत द्वारा देह मन वो आत्मा तीनों में रहती हुई, तीनों के बोध-भान को समाप्त करती हुई इनके परे की अवस्था में प्रवेश कर जाती है।

नाम के मार्ग को विहंगम मार्ग या आकाशी मार्ग कहते हैं। इस मार्ग

बाहरी गुरु लाख तुमको आर्शीवाद दे तुम नहीं जाओगे। बह राधास्वामी दयाल दया करने वाला ऐ इन्सान तेरी अपनी जात है तू आप ही अपने ऊपर दया करेगा। अगर तू आप चाहता है कि तू इस चक्कर से निकल जाये तो तू निकल जायेगा किसी ने नहीं निकालना यह सचाई है जो मैंने अपने जीवन में समझी। ऐ मित्रो जीवन सच्चाई की तलाश में गुजारी। ऐ इन्सान तेरा अपना ही विश्वास, श्रद्धा यकसूई और कर्म तेरी सहायता करता है। अगर कोई सहायता करने वाला कोई है तो वह घट-घट वासी है। फकीरचन्द न कहीं किसी की सहायता करने जाता है न ऐसे झूठे गुरुमत का हामी है। मैं ज्ञानदाता और सत्यवक्ता बन कर बड़ी निर्भयता से यह सच्चाई बतायी है। ताकि जो अधिकारी हो वो लाभ उठाले।

इस गुरु और मालिक के रूप की गलत समझ ने इन्सानी नसल को बाँट दिया और संसार धर्मों और पंथों में बट गया। सन्त इसीलिए संसार में आते हैं कि A unity of Religion and unity of humanity हो जाये और सन्तमत जो शिक्षा देता है यानी जो कबीर साहिब नानक साहिब और राधास्वामी दयाल दे गये या मैं देता हूँ इसके बिना कल्याण नहीं हो सकता, नहीं हो सकता। सरकार जितना चाहे प्रयत्न करले। अतः मैंने इन्सान बनो की आवाज उठाई है कि ऐ इन्सान। जान कि तू कहाँ से आया है। एक तत्व है उसमें सब प्रगट हुए हैं। तुम्हारे अन्दर एक अहंभाव आगया है। इस अहं ने सब को पागल किया हुआ है। सच्चाई को मान।

विश्वास और प्रेम में है। जहाँ भी तुमने सिर मुड़वाया हुआ है उस रूप को जो तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है उसको पूर्ण मानो अपने अन्तर में उसकी शक्ल बनाकर ध्यान लगाकर माँगो अगर न मिले तो मुझे बुरा भला कहो। जो कुछ हैं तुम्हारे अपने अन्तर हैं जो अन्तर गुरु का दीदार करते हैं उसको सब कुछ मिलता है कि बाहरी गुरु की भक्ति जरूरी हैं और वह यह भक्ति है तुम इस समय कर रहे हो

दर्शन करे वचन पुनि सुने सुन सुन सुनकर नित मन में गुने।
गुन गुन कड़ ले तिस सारा कढ़ सार करे अहारा।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गमाई।

तुम जो सत्संग इस समय सुन रहे हो वशर्ते कि गुरु भक्ति कर रहे हो वशर्ते कि तुम्हारा ध्यान मेरी शक्ल या वाणी की तरफ है। यही गुरु भक्ति है। शेष जो लेना देना है यह सांसारिक व्यवहार ह।

ऐसी लगन लगावे जो जन, छिन छिन रहे गुरु चरन समाये।
घट आनन्द पाय।

अब देखो उन्होने बाहरी गुरु के चरणों को तो नहीं कहा। संसार भूल गया। यह वाणियाँ रोचक हैं। इस रोचकपने ने दुनियाँ को पागल बना दिया अब जो पहला कड़ी को सुनकर अधूरा अर्थ समझे वह क्या करेगा ? वह समझेगा कि गुरु के दर्शन करने से सारे पाप नष्ट हो गये। मैंने इस कमी को देखा। इसलिए सिर खपा रहा हूँ।

चरण भेद ले सुरत चढ़ावे दरशन पस ले रहें त्रिपताय।
घन शब्द सुनाये
मेहर करे गुरु राधास्वामी प्यारे एक दिन ले निज चरण लगाय।
धुर घर हहुंचाये

अब कौन गुरु दया करेगा ? ऐ इन्सान ! अगर तेरी आत्मा सच्ची है तू सच्चे मन से जाना चाहता है तब तू वहाँ जायेगा।

सुनाता हूँ।

गुरु प्यारे का कर दीदारा घट प्रीत जमाय।
गुरु दरशन की महिमा भारी, छिन में कोटिक पाप नसाय।
जीव काड़ा बनाये।

अब जो लोग ऐसी वाणी सुनेंगे वो क्या करेंगे ? गुरु के पीछे दौड़ेंगे। गुरु का दीदार मागेंगे। वो इस दीदार से यह समझते हैं कि केवल बाहरी दीदार करने से उनका काम बन जायेगा। गुरु के दर्शन से उनके पाप काटे जायेगे अरे बाबा ! जब ब्रह्मणों का राज्य था तो ब्राह्मणों की गुड्डी चढ़ी हो गया ब्रह्म वाक्यं जनार्दना। कभी महुर्त निकाले जाने थे। महुर्त न निकले तो फिर कहते कि किसी ब्राह्मण को पूछकर चले जाओ। वह परमात्मा की आज्ञा है। अब जहाँ संतों का राज्य हो गया कि उनके दीदार करने से तुम्हारे पाप कट जायेगे। मैं भी मानता हूँ मगर वह गुरु कौन है यहाँ तुम भूले हुये हो। अगर यह सच्चाई मुझे राधा स्वामी मत की न मिलती जो आगे शब्द में है तो चाहे मैं नर्क में जाता हूँ मैं राधास्वामी मत के विरुद्ध वो जहर उगलता कि यह याद रखते।

विरही जन कोई जाने रीत,
जस दरपण में दर्श दिखाये हिये रूप बसाय।

यह दर्पण में दर्श तुम्हारे गुरु का रूप जो तुम्हारे मन में है जैसे दर्पण में तुम ने ऐसे अपने अन्तर गुरु की मूर्ति बनाओ। वह जो दर्शन अपने अन्तर करोगे वह तुम्हारे काम पूरे करेगा। केवल बाहरी गुरु के दर्शन से तुम तर नहीं सकते। मेरे शब्दों के भावार्थ को पकड़ने का प्रयत्न करो। मेरे शब्दों पर मत जाना। लोग आते हैं मैं कहता हूं ध्यान बनाओ माँगा करो। जब मिलते हैं तो कहते हैं कि हमारा काम हो गया ध्यान बन गया। जो लोग कहते हैं कि ध्यान नहीं बना और काम नही हुआ तो मैं कहता हूँ कि मैं क्या करू ? तुम्हार ध्यान नहीं बना तो मैं सिर मुड़वाऊँ। जो कुछ हैं तुम्हारे अपने ही

न दृष्टा है न दृश्य है। वह क्या हालत है ? जो मैंने आपको कही। उदाहारणतः जब आप गहरी नींद में चले जाते हो तो क्या वहाँ दृष्टा या दृश्य होता है ? अपनी हस्ति को गुम कर देता है। यही अन्तिम उद्देश्य है।

जात सिफात न अब्बल आखिर,
गुप्त न परघट बात न जाहत।
राम रहीम करीम न केशो,
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं या सो।

वह कुछ है। वहाँ जाकर व्यक्ति कुछ नही कह सकता।

सिम्रित शास्त्र न गीता भागवत,
क्या पुरान न वक्ता कीरत।
सेवक सेव न दास न स्वामी,
नहिं संतनाम न नाम अनामी।

अब देखो ! वहाँ नाम नहीं है इसका क्या अभिप्राय है ? यह उनको पता होगा जिन्होने वाणी लिखी है। मैंने क्या समझा मैं चलता चलता जब वहाँ जाता हूँ जहाँ अपनी हस्ति या अपनापन खो जाता हूँ क्या रहता है। खेद ! शब्द नही मिलते। एक Super-most conscience रहती है। जब तक मैं शरीर में हूँ मैं Feel (अनुभव) करता हूँ। शरीर से निकलने के बाद मेरा क्या हाल होगा मैं कह नहीं सकता। जो कुछ मेरे अनुभव में आया है या अनुभव हुआ है वही राधास्वामी दयाल का है, वही कबीर साहिब का है और दाता दयाल ने मुझे इसारे में कहा था। मेरी समझ में नहीं आया। मैंने जो कुछ कहा इसका सबूत आपको दे दिया। पता नही मेरा जीवन कब तक है मैं आपका दर्द दिल से सच्ची बात कहना चाहता हूं कि जीवन में इन्सान का विश्वास और अपना ध्यान ही उसके सभी कार्य करता है। आपको मैं हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब जिन्होने राधा स्वामी मत चलाया है उनका एक शब्द

जहाँ पूरन पुरुष हमारा।
जहाँ पुरुष तहवाँ कछु नहिं।
कहैं कबीर हम जाना।
हमरो सैन लखे जो कोई,
पावे पद निर्वाना।

कबीरसाहिब ने यह दिया। मैं भी यही कहता हूं। अब राधास्वामी दयाल जेठ महीने में क्या कहते हैं? यहाँ अपना घर है वह क्या है?

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी।
संत दयाल जीव हितकारी, भेद कहे अब निज कर भारी।

अभिप्राय है कि इन्सान किसी बात की लालसा करता है उसमे कोई इच्छा है संत क्या कहते हैं? क्या उसको भेद देते हैं कि भाई! तू कौन है, कहाँ से आया है तथा कहाँ जाना है? मैंने क्या समझा कि कहाँ से आया है? अनामी अवस्था से अर्थात मैं पहले नहीं था। उसमे एक ताकत थी। शब्द पैदा हुआ तब सुरत पैदा हुई। यह मेरा अनुभव है। यही स्वामीजी ने कहा है आद में गति होने से शब्द पैदा हुआ शब्द से सुरत, सुरत से शब्द। आगे ऐसे रचना हुई। तो हम कौन हुए? चेतन के बुलबुले। वह अनन्त है। उस मालिक का किसी संत परमसंत, अवतार या ऋषि को पूरा पता नहीं लगा। ढूँढ़ने के निकले अपनी हस्ति खो गये। तो उन्होंने कह दिया वहाँ कुछ नहीं।

हि खालिक मखलूक न खिल्कत,
कर्ता कारन काज न दिक्कत।

यहाँ से हम आये हैं वहाँ यह हालत है:—

दृष्टा दृष्टि नहि कुछ दरसत,
वाच लक्ष नहि पद न पदारथ।

कई कहते हैं कि मैं परमात्मा को देख आया हूँ। कई ऐसे धर्म हैं जो कहते हैं हम खुदा को दिखा देते हैं। स्वामीजी कहते हैं कि वहाँ

कभी पिता बनते हैं कभी हम कुछ बनते हैं। तो मेरी समझ में क्या आया ? कि उस मालिक की गति को न कबीरसाहब न राधा-स्वामी दयाल, न दाता दयाल, न किसी और ने ही जाना। अगर यह जाने हुए होते तो अपनी हालत को बिगड़ने क्यों देते ? दुख क्यों उठाते और क्यों शहीद होते ? इसलिए जितनी धार्मिक बातें हैं कि हम परमात्मा हैं, यह हैं, वह हैं, यह सब इन्सान की मानसिक हालत है फिर क्या करना चाहिये ? ऐ इन्सान राम राम चाहे न जप केवल एक विश्वास रख कि वह मालिक हैं हम उसकी अंश हैं। दुनियाँ ऐसे बनी हुई है। जब तक जीवन है अपनी नियत साफ रख अपनी जाति गरज के लिए किसी के साथ धोखा फरेब, चार सौ बीस हेरा फेरी मत करना ताकि तेरे कर्म न बन। क्यों कहता हूँ। क्योंकि अपने कर्मों के फल से कोई बच नहीं सकता।

क्योंकि मन किसी भी चीज के साथ सम्बन्ध पैदा करता है यह समझ लें कि तू हमेशा जहाँ रहने वाला नहीं है। अतः जब तक जीना है खुशी से जीवन काट। यह ख्याल मत कर कि तू यहाँ का रहने वाला है। जहाँ इतना पसारा मत पसार। मरने के बाद क्या होगा ? कुछ खबर नहीं। जब मैं वहाँ जाता हूँ वहाँ जाकर मै ही नहीं रहता। मेरी लय ही समाप्त हो जाती है तो शेष जो रह जाता है हम उसको अनामी या अकाल पुरुष कह देते हैं। क्योंकि अपनी हस्ती खो गये। उन्होने कह दिया वहाँ अनामी है, अकाल है। वास्तव में किसी को पता नही कि क्या क्या है क्या था। अगर है भी तो क्या हुआ। प्रारम्भ में क्या था ? Silence in the biginning and Silence in the end· जीवन क्या है।

लब खुले और बन्द यह राजे जिन्दगानी।

जो कुछ मैंने समझा वो कहा। यही कबीरसाहब एक शब्द में कहते हैं।

सखियाँ वा घर सबसे न्दारा।

तो मेरे साथ शारीरिक एहसासात होते हैं। इस शरीर में तो वह नही है तो फिर उसे मैं मन में ढूँढ़ता हूँ। मगर जब साबित हुआ कि मन में जितने दृश्य दिखाई देते थे वो तो बाहरी Suggestions and Impression थे और वह मेरा ही अपना मन था। तो विवश होकर मन को छोड़ जाता हूँ आगे प्रकाश और शब्द है। प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता हूँ तथा उसवस्तु को ढूँढ़ता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह जो चीज है वह क्या है ? नही वह है महल में प्यारा। मेरे शरीर में कौन सो वस्तु प्यारी है। मेरा अपना ही आप है मेरी हो जात है मेरा अपना आप ही अपना प्यारा है वहां जाकर अगर मैं यह कह दूँ कि जो कुछ है वह मैं ही हूँ कि जब मेरे शारीरिक कष्ट होता है तो उसी को दूर कर लूँ। मैं न सही कोई और संत या परमसंत ऐसा कर सकता ? मगर कोई नही कर सका। जब मैं इन बातों को सोचता हूं कि इतना ऊँचा चढ़कर अपने आप को जानकर फिर भी हम अपने कर्म के चक्र को या शारीरिक रोगो से भी नहीं बच सकते तो फिर हम किस खुदा को ढूढे ? बना क्या ? किधर जाये, कोई तरीका है ? यह मैं दर्द दिल से कह रहा हूँ। फिर किस परिणाम पर पहुँचा ? एक ताकत है। वह ताकत क्या है क्या नहीं। उसके बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता।

है, है, है, है, इसमें, कोई शक नहीं।

मगर वह क्या है यह, कहने का किसी को हक नहीं।

एक ताकत है इसमें हरकत होती है शब्द होता है और प्रकाश होता है उस शब्द और प्रकाश से संसार बनता रहता है। उसमे केन्द्र यानि ऊपर के खुर्रे और खिलकत बनती रहती है तथा उसी में समाती रहती है। इंसान क्या है ? मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूँ ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं मेरी इस Conciousness में एक मैं आ गई। शारीरिक मैं, मानसिक मैं, और सुरत की मैं, वह मैं, अज्ञान का नाच नचाती है। कभी हम गुरु बनते हैं, कभी हम चेले बनते हैं,

इसलिए पेट के लिए रोटी का सामान पहले पैदा करो । मगर लालच वश में आकर कि हाय ! वो आ जाये यह महापाप है । इस लाईन पर चलने के लिये आदमी Self Supporting होना चाहिए । पहले इन्सान बनो । रूहानियत पीछे । इन्सानियत आये । जब तुम अभ्यास करते हो अगर तुम्हारे मन में सांसारिक वासनाये हैं तो आयेगी । उसका एक ही इलाज है कि सर्वप्रथम अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को पाले । साथ ही साथ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे । खाना उतना खाओ जितना तुम्हारा पेट पचा सकता हो । यदि जीभ के स्वाद के कारण अधिक खाओगे तरह तरह की बीमारियाँ हो जायेगी, मन चँचल हो जायेगा ।

अब यह प्रश्न रह गया कि क्या बाहरी गुरु कुछ दे सकता है ? दिवानो ! बाहरी गुरु ने तुमको केवल सीधा रास्ता व सच्चा तरीका बताना है । उसकी संगत में तुम जाओगे तो तुम्हारा विश्वास हो जायेगा । हो सकता है कि उसके प्रभाव से तुम्हारे विचार बदल जायें मगर वो ही बदलेगा जो बदलना चाहता है या जिसके दिल में इच्छा है कि मेरा जीवन बन जाये । उसको तो संत का प्रभाव पहुँच सकता है । लेकिन जो बदलना नहीं चाहता उसका कोई क्या करेगा । कबीर साहब कहते हैं ।

कर नैनो दीदार, महल में प्यारा है ।

बाहरी गुरु ने आपको केवल रास्ता बताना है कि असली या सच्चा गुरु तुम्हारे अपने अन्तर है । मैं अपने आपसे पूछता हूं कि धर्म से सच्च बता फकीरचन्द ! जो तुम्हारे महल में गुरु है । क्या तुमने उसको देखा है ? उसको तू मिला है, ऐ मेरे मन ! अगर दुनियाँ की हेरा फेरी करके अपने इज्जत और मान के लिए धोखा देगा चार दिन का जीवन है तू कहाँ जायेगा । क्या तूने देखा है ? हाँ तूने देखा है । कबीर साहिब कहते हैं वह महल में जानि मैंरे शरीर में है । मैं तालाश करता हूं कि वह शरीर में कहाँ है ? जब मैं शरीर में होता हूँ

और भँवर गुफा है। यह सब तुम्हारी मन की अवस्थायें हैं। उद्देश्य तो ठहराव से है। अगर मैं गलत हूँ तो यह वर्तमान महात्मा अपने जीवन के आधार पर मेरा खण्डन कर जायें तो मुझे कोई दुख नहीं लेकिन किताबों का हवाला न दें। स्वामीजी ने स्पष्ट लिखा है।

पुस्तक तुस्तक छोड़ तेरे भले की कहूं।

इस भ्रम में न पड़ो कि तुम्हारे अन्दर यह दर्जा खुला है या नहीं खुला। यह दर्जे व्यक्ति के अपने ही मन की प्रकृति के अनुसार होते हैं। इसलिए केवल अपने मन की वृत्ति को एकाग्र करने की कोशिश करो रूप बनाते हो तो गुरु की आँखे और मत्थे के बीच अपने ध्यान को गाढ़ दो ताकि तुम्हारा वहाँ जाकर निश्चल हो जाये। अगर प्रकाश देखते हो तो प्रकाश में अपने ध्यान को गाढ़ दो ताकि तुम्हारे समक्ष प्रकाश ही प्रकाश रह जाये। अगर ऐसा करोगे तो क्या होगा। एक एक प्रकार की खुशी व आनन्द मिल जाता है जो मैंने समझा है। हमने कहाँ जाना है? हमने मालिक या अपनी जात को मिलना है। वह तब मिलेगा जब इन्सान :—

तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर होय।
कहे कबीरता पलक को कल्प न पावे सोय।

शरीर मन व सुरत को थिर करना ही ठहराना है। साधन और योग का असली उद्देश्य है जब मन स्थिर हो जायेगा फिर क्या होगा तुम्हारे मन को ताकत आ जायेगी। तुम्हारे मन व आत्मा को शान्ति प्राप्त हो जायेगी यही सुगम से सुगम तरीका है मगर जब तक तन स्थिर नहीं होगा यह नहीं होगा। विषय विकार का जीवन व्यतीत करने वाले चाहे कितना भी प्रयत्न करे उसका मन स्थिर नही हो या जिसमें किसी बात की कमी है तुम्हारे पेट में रोटी नहीं, रोटी कमाने की चिन्ता है और फिर आशा करो कि तुम्हारा साधन बन जाये। कैसे बनेगा :—

प्रागदा रोजी प्रागदा दिल।

आदमी को पहले किसी योग्य व्यक्ति जो स्वयं इन चीजों से रहित हो का सत्संग करना पड़ता है। अगर वह शर्तें तुम में नहीं है तो अभ्यास करते रहो तुमको कुछ नहीं मिलेगा। मेरे अपने साथ घटा हुई है मैंने १९०२ में नाम लिया। १९१६ तक प्रयत्न किया, बहुत अभ्यास किया सिवाय प्रेम ही प्रेम और रोने पीटने के कुछ नहीं मिला यह क्यों था? क्योंकि मेरी छोटी आयु की शादी थी और गृहस्थ में फँसा हुआ था। जो ज्यादा कामी हैं उसके लिए कभी भी नाम नहीं है :—

कामी कबहु न गुरु भजे और नाम गुरु का ले।

जिनका जीवन विषय विकार का होता है उनको शान्ति नहीं मिल सकती। वह गुरु के पीछे तो दौड़ते हैं मगर वास्तविक रूप में गुरु नहीं भज रहे। नाम केवल सुशान्ति को दूर करने लिये लेते हैं। इसलिए आवश्यक है कि पहले इन्सान शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को काबू रखे। यही भेद है जो मैं बताये जाता हूँ कि जितने भक्त जो बहुत गुरुओं के पीछे या परमात्मा के पीछे दौड़ते हुए तुम देखते हो वह हैं जिनके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरे हुए होते हैं। यह वह भेद है जो आज तक किसी ने नहीं खोला मैं खोल रहा हूँ, एक मेरा अपने जीवन का, दूसरे सत्संगियों के जीवन का अनुभव है। इसलिए मैं कहता हूँ कि पहले तुम अपने बच्चों के चरित्र को बनाओं। मगर मां बाप जो आप गिरे होते हैं वे बच्चों को क्या सम्भालेंगे। मेरी बात को याद रखो मैं अपनी कमाई सिवाय रोटी कड़े के सारी की सारी अज्ञान के वस में आकर दाता दयाल को भेजता रहा। क्यों भेजता रहा? क्योंकि मेरा ब्रह्मचर्य गिरा हुआ था। मन अशान्ति या और सहारा चाहता था। मगर १९१९ के बाद जब मुझे सत्यता का पता लग गया मैंने जो दिया प्रसन्नता से दिया। तो संतों का पैदा होना केवल पापियों के लिए है गिरे हुये व्यक्ति है संत उनके लिये आते हैं जो नेक हैं उनको संतों के पास से

क्या लेना ।

धोती नेती बस्ती पाओ, आसन पदम जुगल से लाओ। कुम्भक कर रेचक करवाओ, पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है।

कुम्भक वृत्ति के स्थिर हो जाने को कहते हैं। सबसे पहले यह शर्त बता दी कि विषय विकार से बचो, फिर ठहरो, सुमिरन इसलिये किया जाता है कि तुम्हारे चित की वृत्ति मध्य में ठहर जाये इसको कुम्भक कहते हैं। जब ध्यान करोगे गुरु ने जो नाम तुमको बताया है है उसका या गुरु के रुप का सहारा ले कर वहां ठहरने की कोशिश करो। कबीर साहब ने इस शब्द में पिण्ड या शरीर के घट चक्रों का व्यान किया है। मैंने इनका अभ्यास नहीं किया जिन्होने किया है उनमें सिद्धि शक्ति आ जाती है। शारीरक शक्ति में उन्नति कर सकते हैं। संतों ने घट चक्र छुड़ा दिये तथा सीधे ही भूमध्य से साधन प्रारम्भ कर दिया आगे वह कहते हैं :—

केवल न भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिण्ड मंझार।
सत्संग कर सतगुरु सिर धारा, वह सत नाम उचार है।

वह कहते हैं कि इसके आगे सिर धारो। इसका क्या अर्थ है ? अर्थात ज्ञान प्राप्त करो। संसार ने यह समझा है कि गुरु का ध्यान करना ही सतगुरु का ध्यान करना है। यह गलत है सतगुरु धारण करने का अर्थ यह है कि किसी गुरु के पास जाकर उसके पास बैठकर उसकी बातों को सुनकर समझकर उस पर अमल करना है। मैंने १९०५ ई० में सतगुरु धारण किया था मगर कुछ समझ नहीं आई। दाता दयाल बहुत समझाते थे :—

फकीरा गुरु तो तेरे पास, गुरु तो तेरे पास।
तेरे मन में तेरे तन में, तेरे स्वाँसों स्वाँस।

मेरे दिमाग में यह समझ आती थी कि जब मैं दाता का ध्यान करता हूँ तो गुरु महाराज मेरे अन्तर आ जाते हैं। मैं इसका अर्थ यही समझता रहा। मगर मुझे अब पता लगा कि वास्तव में यह

बात नही थी । वह जो वास्तविक गुरु है वह ज्ञान समझ और विवेक है । मगर हम भ्रम में आकर लुट गये और प्रत्येक धर्म और पथ वाले ने हमको मूर्ख बनाया सत्य बात किसी ने नहीं बताई । दाता दयाल ने किताबों में तो बहुत कुछ कहा, मगर अपनी जुबान से कभी नही कहा कि मूर्ख ! १९०५ ई० में तेरे अन्तर प्रकट नहीं हुआ । देखों ! मेरा सारा जीवन इसी एक दृश्य के सहारे अज्ञान में गया, पर मैं उनको मालिक का अवतार समझकर सारा जीवन उनके पीछे लगा रहा मैं बड़ी सच्चाई से बात कर रहा हू ताकि जो जीव अधिकारी है और सच्चाई चाहते हैं उनको सीधा रास्ता बता जाऊँ कि भाई ! मैंने तो गलतियाँ देखायी हैं तुम न खाना :—

आँख कान मुख बन्द कराओ, अनहद झिंगा शब्द सुनाओं ।
दोनों तिल इकतार मिलाओं, तब देखो गुल्यारा है ।

वह कहते हैं कि जब यह बात समझ में आ जाये तब अपने अन्तर मन को ठेहराओ । तुम्हारे अन्तर शब्द होते हैं । इन शब्दो की व्याख्या मैंने कई बार सत्संगों को हुई है सहस्रदलकमल में घण्टा बजता है त्रिकुटी में ओंकार बोलता है सून्न में क्यों रारंग सारंग बजता है, महासून्न में अन्धेरा क्यों है भवर गुफा में बासुरी क्यों बजती है आदि । इनको दुबारा बताने की आवश्यकता नहीं । यह क्या है ? जिस प्रकार के तुम्हारे ख्यालात व भाव हैं और जैसी मन की प्रकृति बनी हुई है जैसे संस्कार और प्रभाव पड़े हुये हैं, जब तुम जब तुम अपने अन्दर जाओगे तो वैसे ही शब्द सुनोगे और रूप देखोगे प्रकृतियाँ भिन्न भिन्न है । इसलिए सारे दर्जे प्रत्येक व्यक्ति पर नहीं खुलते । मगर तुम मंजिल पर पहुच सकते हो । संतों ने बड़ी समझ से कत्म लिया । उन्होने इसको इस प्रकार लिख दिया कि संत बन्द गाड़ी में ले जाते हैं मगर हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है ? शरीर का ठहराव मन का ठहराव तथा आत्मा का ठहराव । इस ठहराव की जो परिस्थितियाँ हैं उनका सहस्रदलकदम, त्रिकुटी सून्य महासून्य

प्रवचन

हुजूर परमदयाल पं० कबीरचन्दजी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर (पंजाब)

दोस्तों भाइयों ! संतों की शिक्षा को स्पष्ट कर देने के विचार से यह मुसीबत बुढ़ापे में सिर पर मोल लेता हूँ। काश ! मैंने यह प्रण न किया होता कि अपना अनुभव कह जाऊंगा तो इस संकट में न फंसता। जो कुछ मैंने इन सतो के शब्दों का अर्थ समझा है वह और है या जो आम जनता समझती है या जो मैं पहले समझता था वह और है। दाता दयालजी ने उस मालिक क मिलने के लिए मुझे यह संतमत दिया था आज आपको कबीरदास का शब्द सुनाता हूँ जिसमे वह कहते हैं कि मालिक तुम्हारे अन्तर है।

कर नैनों दिदार महल में प्यारा है।
काम क्रोध मद लोभ विसरो, शील सन्तोष क्षमा सत धारो
मद् मांसमिथ्या तजि डारो।
दो ज्ञान घोड़े असवार, भरम से न्यारा है।

अब देखो ! जो व्यक्ति मालिक को मिलना या अपने घर जाना चाहता है उसके लिए यह शर्तें हैं जो ऊपर लिखित हैं। वह मालिक तुम्हारे अन्तर में है मगर जब तक कोई व्यक्ति इन नियमों का अनुयायी नहीं होता विषय विकार मान मद या गलत मस्ती और व्यर्थ लोभ को नहीं छोड़ता लाख प्रयत्न करने पर भी अपने घर नहीं जा सकता और न ही उस मंजिल को तय कर सकता है। लाख कोई उस गुर को धारण करे जब तक यह शर्तें पूरी नही है उसको इस नाम के लेने का कोई लाभ नहीं। इन शर्तों को पूरा करने के लिए

इस समय तक जहाँ मैं पहुँचा हूँ मैंने बता दिया दुनिया की बातें भी बता दीं। आप लोगों को तो ऊपर जाने की आवश्यकता नहीं आप लोग एक विश्वास एक आस रखो। कहीं भटका मत खाओ बजाय बाहर में बाबा फकीर, देवी के पीछे जाने के अपने अन्तर में चलो। तुम्हारा काम बन जाएगा और न बने तो मैं जिम्मेबार हूँ।

नोट---

आप लोग मेरे सतसंग में आते हैं अगर मेरा ध्यान करने से आपकी मनोकामनायें पूरी नहीं होती तो यह समझलो कि मैं सन्त नहीं हूं एक ही बात है फिर आने की कोई आवश्यकता नहीं वशर्ते कि तुम ध्यान कर सको, मेरे रूप को अपने अन्दर बसा सको और जब तक मेरे पास रहते हो पूरे ध्यान से मेरी तरफ देखते रहो अगर मनोकामनायें पूर्ण नहीं होती तो मेरा कसूर है आपका कसूर नहीं क्योंकि सन्त को संग का प्रभाव होना चाहिए। सत का प्रभाव है शान्ति व तकसीन। तो फिर सत्संग करने का क्या फायदा ? अगर किसी गुरू के दरवार में जाकर हमको शान्ति ब तकसीन नहीं मिलती तुम्हारे भ्रम नही जाते तो वहाँ जाने का क्या फायदा, वहाँ जाकर क्यों सिर झुकाते हो ? मैं तो यही कोशिश करता हूँ कि अपने आपको आमिल बनाऊँ। अगर मेरे में नुक्स है तो आपको फायदा नहीं पहुँचेगा, अगर मैं सच्चा हूं तो आपको फायदा पहुंचना चाहिए। फायदा क्या है ? आपको शान्ति व तकसीन मिलनी चाहिए। वाकी रह गया दुनियाँ के कारोबार यह तो भई, जो कुछ तुमने किया हुआ है तुमको वो मिलेगा। फिर भी अगर तुम्हारा विश्वास है तो इसमें भी तुमको फायदा हो सकता है।

नहीं कहता मगर सुरत को शब्द के साथ लगाता और मिलाता है वह र
राधास्वामी है मैं उसको राधास्वामी समझता हूं। मेरी बात को समझना
राधास्वामी कोई फिरका नहीं है हमारे अन्दर सुरत है और शब्द है जब सुर
शब्द को सुनती है तो उसमें मेल खाती है उस हालत व उस अवस्था का
न म राधास्वामी है राधा को स्वामी से मिला देना यानी सुरत का शब्द से
मिला देना मेरे यहाँ असम्भव है। मैंने राधास्वामी मत में तालीम पाई है
मगर मैं टेकी नहीं हूं, आजाद ख्याल का कोई जो सुरत शब्द का अभ्यासी
है भले ही किसी पंथ का हो एक ही बात हैं--

आत शब्द दो अनुभव रूपा
तू तो पड़ा भ्रम के कूपा।

तो आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिबा। तुम आते हो आकर बात को समझो और उस पर अपने घर में जाकर जमल किया करो तुम्हें तब फायदा होगा। अगर अमल नहीं करते यहाँ आये इस कान सुना उस कान निकाल दिया तो क्या फायदा। मैं भी बोल-बोल कर थक जाता हूँ बूढ़ा आदमी हूँ आपने भी कानरस तो लिया आपके आने का क्या फायदा आप क्यो आते हो ? आते हो तो मेरी बात की सुनो सुन कर गुनो। अगर अच्छी लगी है और तुम्हारा दिल कहता है कि मैं जो कुछ कह रहा हूं ठीक कह रहा हूँ और उस पर अमल करो तब तुमको फायदा होगा वरना—

सत्संग करत बहुत दिन बीते
अब तो छोड़ पुरानी बात।

सत्संग करते करते बहुतेरे मर गये ऐसी कौनसी जगह है यहाँ सत्संग नहीं होता। कहीं निरंकारियों का सत्संग कहीं अकालियों का सत्संग, कहीं सनातनियों का सत्संग। सत्संग सभीं दुनियाँ में ही होते हैं क्या दुनियाँ तर गई ? तरना तुमने आप है केवल अमल करो। मुझको नाम से क्या मिला

विश्वास है। हम गृहस्थी असलीयत को न जानने के कारण लुट गये और इन सचाई न बताने वाले गुरुओं ने हमको मूर्ख बना कर लूटा है किसी ने कोई सच्ची बात नहीं बताई। हम लुटने में मजा लेते हैं। मैंने आपको बिलकुल साफ केह दिया कि सब कुछ तुम्हारे अन्दर में है, तुम में है। एक रूप बनालो। उस सतसंग में जाओ जहां से तुमको समझ व सच्चा ज्ञान मिलता है--

भजन ध्यान से यह भटकने न पावे
निठुर मन को निशदिन चिताया करो तुम

सुमिरन ध्यान से मन को इकट्ठा करने का साधन किया करो तुम किसी नाम से भी इकट्ठा करो मतलब तो तुम्हारे मन के ख्याल के इकट्ठा होने, तुम्हारे मन की एकाग्रता ने व तुम्हारे चित्त की वृत्ति की एकाग्रता की कहफियत ने तुमको लाभ पहुंचाना है, शान्ति देनी है, Will Power बढ़ानी है तुम किसी भी नाम और किसी भी तरीके से इकट्ठा करो केबल मन को एकाग्र करने की कोशिश करो। इसमें धर्म और पंथ का तो कोई झगड़ा ही नहीं रहा इस नाम के झमेले में क्या रखा है कोई नाम जो गुरू ने बता दिया उस नाम के सहारे अपने चित्त की वृत्ति को एकाग्र करने की कोशिश करो यहां तुम्हारा मन एकाग्र हुआ तुम्हें आनन्द खुशी और मस्ती भी आएगी और तुम्हारा काम भी हो जाएगा यह बिल्कुल आसान बात है—

मिलेंगे गुरू अपने जीवन के साथी
तड़प मन में दर्शन की बढ़ाया करो तुम।
मनो कामना होगी पूर्ण तुम्हारी
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम।

अब राधास्वामी है क्या ? पंथ चलाने वालों ने एक टैकनीकल अक्षर रख दिया—

राधा आद सुरत का नाम. स्वामी आद सुरत पहचान।

सुरत का अपने अन्तर में शब्द के साथ मिल कर सुनना। उसकी जो हालत है उस हालत का नाम राधास्वामी है अगर एक आदमी राधास्वामी

अनुभव कह जाऊँगा मैंने जान देनी है अगर मैं आज तुम लोगों से सचाई का व्यवहार नहीं करता तो मेरा अन्जाम क्या होगा। इसलिए मैं तुम्हारी आंखों में मिट्टियां डालकर कि हां मैं तुम्हारे अन्दर प्रकट होता हूँ मैंने पुत्र दिया या बीमारी से बचा दिया मैंने तुमको यह कर दिया ऐसे ख्यालात देकर और अंधेरे में रख कर मैं तुम लोगों से बिल्कुल सेवा नहीं लेना चाहता।

तो नाम जपने से मुझे क्या मिला ? जो ऊँची अवस्थ है वहां तो अभी तक मुझ से ठहरा नहीं जाता मगर मेरा अनुभव यह है कि दूसरे दुनियां में मैं मन में रहता हूं, सुमिरन ब गुरु का ध्यान करने से, ध्यान की शक्ति से मेरे भी सारे काम होते हैं और दुनियां के भी होते हैं। मैंने यह आसान तरीका बता दिया अब अमल करना तुम्हारा काम है अगर तुम नहीं करते तो इसमें मेरा क्या कसूर है या गुरु का क्या कसूर है। तुम आप करो—

वो दाता दयाल अवश्य देंगे दर्शन
सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम

लगन रखो ! मैं मालिक को मिलने के लिए लगातार २४ घण्टे रोया ा प्रकृति मुझे कहां ले गई जहां मेरा सारा काम बन गया। तुम्हारे दिल में सचाई होनी चाहिये मैं बार-बार इस बात पर जोर देता हूं कि कहीं मत जाओ न मन्दिर में न तीर्थ मैं और न फकीरचन्द के पास। फकीरचन्द के पास केवल इसलिए जाओ कि उसके पास से तुमको समझ आजाये। गुरू के गुरू के पास तुमको समझ आजाये। गुरू के पास इसलिए जाया जाता है कि हमको सच्ची बुद्धि मिल जाये। हमको Line of action मिल जाये। हमने क्या करना है इसका पता चल जाये इसलिए गुरू की सेवा तथा की सत्संग की महिमा है। सत्संग में मिलता क्या है—

विनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

सत्संग में इसलिए जाओ कि सत्संग में सच्ची समझ या सोमती है। सतसंग में इसलिए मत जाओ कि बाबा फकीर तुमको पुत्र दे देगा या बाबा फकीर या किसी ने तुमको यह कर देना है। बल्कि यह तुम्हारा अपना ही

तुम्हारे मन की इच्छा होगी वह पूरी होगी। इसका कोई उस नाम से सम्बन्ध नहीं है यहाँ हमको नाम पहुँचाता है वह बिल्कुल अलग वस्तु है और वह असली नाम केवल उनके लिए है जो इस आवागमन से बचना चाहते हैं कि दुबारा। जन्म न ले यह उनके लिए है। दुनियादारों के लिए यह निम्न दर्जे का नाम है मूर्ति को अपने अन्तर बसाओ। मैं नहीं कहता कि मेरी मूर्ति बसाओ जिस रूप में तुम्हारा विश्वास है उस रूप में बसाओ यह मेरा तजुर्वा है। मैं किस परिणाम पर आया ? कि ऐ इन्सान ! तेरे अपने ही ध्यान की शक्ति का फल है इसलिए दुनियादारों को चाहिए कि दुनियाँ के कामों के लिए ध्यान किया करो, अपने अन्तर में ध्यान करो जो कुछ तुम्हारी इच्छा है वह माँगो न मिले तो मैं जिम्मेदार। ध्यान करना तुम्हारा काम है मैं नहीं कहता कि मेरा करो जिसका भी करो उसको पूर्ण मानो कि वह सब कुछ देने वाला है तुम्हारी दुनियाँ बन जाएगी यह बिल्कुल सच्ची बात है इसमे कुछ भी झूठ नहीं—

कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेगी
करुणा राग अपना सुनाया करो तुम।

यो एक ही बात है उन्होंने कह दिया उसको खबर मिलेगी मैं कहता हूँ कि तुम्हारी अपनी जबरदस्त इच्छा जो है यही तुम्हारी इच्छा पूर्ण करेगी तुम प्रबल चाह रखो। मैं ग्रहस्थियों को यह कहना चाहता हूँ कि किसी के दरवाजे पर जाकर भीख मत मांगो सब कुछ तुम्हारे अपने अन्तर में है अपने अन्तर एक रूप उस मालिक का मान लो एक अपने आप को सच्चे दिल से उसके अर्पित करने के लिए खोपड़ी मे जाया करो। मैं जिम्मेवारी लेता हूँ अगर तुम्हारे काम पूर्ण न हो। मेरी फोटू पर फूल चढ़ाते हो वहाँ जो चाहे व्यवहार किया करें मैं तुम्हारी हमदर्दी के लिए तुमको कहता हू कि अपनी जायदादें हरिद्वार में या किसी और जगह इन मन्दिरों के लिए क्यों देते हो। कोई कुछ नहीं देता। ऐ इन्सान ! तेरे अपने दिल की सच्ची लगन तेरे दिल की प्रबल च ह तेरे अपने ही ध्यान की शक्ति तुमको सब कुछ देती है यह है सच्ची बात जो कि मैं कहना चाहता हूं क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना

वह कहते हैं जहाँ हमने जाना है वहां सतनाम भी नहीं है नाम भी नहीं है और अनामीपन भी नही है यह है जिस नाम की मुझे प्राप्ति हुई और यह नाम पहुँचाता है जो कुछ मैने कहा था वही स्वामी जी ने भी कहा है आज दाता दयाल का शब्द था—

नाम से लौ लगाया करो तुम,
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम।

मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊँगा। यह है यह है यहां नाम ने मुझे पहुँचाया। मैं वहां कैसे पहुंचा ? गुरु की दया से और आप लोगों के तजुर्वो से। जब से मुझे मन के रूप का पता लगा तथा यह यकीन होगया कि मेरे अन्तर में जितनी शकलें व रूप बनते थे वो मेरे अपने ही मन की कल्पना व ख्याल का परिवाम था और यह मायावी हैं बाहर से कुछ नहीं आया तब से मुझे मन व माया के चक्र से परे जाने से इस नाम की प्राप्ति की ओर यह मायावी हैं बाहर से कुछ नही आया तब से मुझे मन और माया के चक्र से परे जाने से इस नाम की प्राप्ती की ओर जाने का मौका मिला यह शक्लें असली और सच्चे नाम को हानि प्राप्त करने में रुकावट डालती है। मगर वहाँ तो वो जाएगा जिसको सांसारिक इच्छायें आशायें और कामनायें नहीं हैं जो सांसारिक इच्छायें रखते हैं उनके लिए यह सतमत की ऊँची तालीम है ही नहीं और न ही उन्हें सन्तमत की ओर आना चाहिये उनके लिए यही है कि अपने ख्याल की दुनियाँ को ठीक बनायें तुम्हारा बिश्वास है जैसा तुम्हारा विश्वास है जैसा तुम्हारा विश्वास और ख्याल होगा वैसी तुम्हारी दुनियां बनती जाएगी इसलिए जो असली न म है वह और चीज है तथा दुनियाँ की चीजें और चीज है। दुनियाँ के कारोबार की उन्नति के लिए क्या करना चाहिए ? सुमिरन और ध्यान।

बसा कर गुरमूर्ति मन के मन्दिर।
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम।

मूर्ति गुरु की हो जो किसी की भी हो जो इच्छा हो बनाओ उस मूर्ति को बनाकर अपने अन्दर में ध्यान किया करो जब तुम्हारा ध्यान पक जाएगा जो

परमात्मा के साथ मिले हुए हैं या कितने ही व्यक्ति यह कहते हैं कि हमको राम या कृष्ण के दर्शन हो गये यह बकवास करते हैं, हमको धोखा देते हैं और हम गृहस्थी लोग उनके पीछे दौड़ते हैं और उनके पांव चूमते हैं क्यों ? सच्चाई नहीं बताते । जिस राम के उन्होंने दर्शन किये वह राम नहीं था वो उस अपने ही मन का विश्वास तथा मन की गढ़त थी । असली मालिक तो वह है जिसकी अवस्था मैंने आपको बताई ।

राम रहीम करीम न केशों
कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं था सो

जो कुछ मैंने कहा वही यह कहते हैं । वहाँ क्या है ? कुछ है मगर उसको ब्यान करने की शक्ति नहीं । नाम ने मुझे वहाँ पहुंचाया मगर अभी तक मुझसे वहाँ ठहरा नहीं जाता । वहाँ पहुंचने से मुझे क्या लाभ हुआ । दुनियाँ ही भूल जाता हूँ अपनी जिन्दगी का सम्पूर्ण खेल समाप्त हो जाता है । उस अवस्था में न दुख है न सुख है मगर फिर आजाता हूँ क्योंकि यह मेरे बश की बात नहीं और मैं हैरान होता हूं—

सिमरनी शास्त्र न गीता भागबत
कथा, पुराण न वक्ता कसरत ।

अब देखो ! संतों के मार्ग ने उन्हें यहाँ तक पहुँचाया और यहाँ इस खुदा के नाम पर क्या कुछ नहीं हो रहा । अनेक सम्प्रदायों के झगड़े देखलो क्या हुआ इस ईश्वर के नाम पर कितने ही सम्प्रदाय बन गये सन्त दुनियां में आये उन्होंने यह बताया कि तुम जिस ईश्वर या मालिक के नाम पर आपस में लड़ते हो वो है क्या वह तो वह अवस्था है यहां हम ही नहीं रहते, यहाँ मैं ही नहीं रहती है, न तू रहती है और सन्तों ने शायद यह सोचकर कि जो लोग मजहब के नाम पर आपस में बँधे हुए हैं इनको अगर सच्चाई बतादी जाये तो हमारा धार्मिक एकता हो जाएगा । इसलिए इस तालीम को फैलाने की आवश्यकता समझी--

सेवक सेव न दास न स्वामी
नहीं सतनाम न नाम न अनामी ।

व अपने ही विश्वास ने अपनी ही श्रद्धा तथा कर्म ने बदलना है यही है जो कुछ मैंने समझा।

तो मुझे नाम से क्या मिला ? यही मिला जो मैं कह रहा हूँ कि अन्त मेरा बो हुआ मध्य मैंने जो पिछले कर्म मैंने किए हुए हैं उनका फल मैं भी भुगत रहा हूँ।

जब मैं वहां चला जाता हूं तो न मेरा शरीर है न मैं हूं न कुछ और है न वह तो एक तत्व है। नाम से मुझको यही मिला और स्वामीजी ने भी जेठ महीने में यही बात कही है—

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हृदय तपन गुजारी
सन्त दयाल जीव हितकारी,
भेद कहें अब भारो खारी।
नहीं खालक, मखलुक न खिलकत
करता कारण काज न दिक्कत
दृष्टा दृष्ट नहीं कुछ दरसत
वाच. मुक्ष नहीं पद न पदार्थ
जात सफात न अब्बल आखिर
गुप्त न प्रकट बातन जाहिर।

गुरु क्या करता है ? भेद बताता है। यह वो भेद देते हैं कि भई। यहां से हम आये हैं वहां न खालिक है और न खलकित और न कुछ नजर आता है न कोई देखने वाला है तथा न दिखाने वाला है। वो यह प्रशंसा करते हैं परमात्मा की ओर असली मालिकता तो यह है कि यहां न जात है, न सिफात है क्या है वह ? कोई क्या कहे कि वह क्या है। मैं सारी जिन्दगी राम को मिलने के लिए पागल होगया और १२-१२ घण्टे अभ्यास किया, अब भी अभ्यास करता हूँ। रात को इसी बहम में रहता हूं। अतः हमारी असली हालत वह है। आजकल कई सन्त कहते हैं हम परमात्मा के साथ मिले हुए

कोई में है और न तू है । एक तत्व है क्या है क्या नहीं बस, इसको जात कहते हैं। किसी ने कह दिया अल्ला अनामी या अकाल पुरुष । वो अवस्था है नाम इन्सान को इस अवस्था में पहुँचाता है दुनियां यह समझती है नाम जप लो तो तुमको पुत्र मिल जाएगा तुम्हारी बीमारी चली जाएगी । या निम्न दर्जों में जिस नाम से सांसारिक वस्तुयें प्राप्त होती हैं या हमारी सांसारिक हालत सुधरती है या बीमारी भी जा सकती है वो शरीर मन और रूह की एकाग्रता या समता के कारण है । वह भी तब जब संसार की जिस इच्छा या वासना को रख कर अगर तुम अपने मन को एकाग्र या इकट्ठा करोगे तब वह वो वस्तुयें मिलेंगी मन के इकट्ठा होने से तुम्हारे मनोबल के बट जाने के कारण तुम्हारी सांसारिक इच्छायें पूरी होंगी वो भी यहाँ तक तुम्हारी अपनी बात का सम्बन्ध है दूसरे के लिए नहीं। यह संसार की चीजें जो हमको मिलती हैं यह हमारी वासना या हमारे कर्मों के कारण हैं। जैसे जैसे हम कर्म करेंगे वैसा वैसा हमें फल मिलेगा जो कुछ किसी को मिलता है यह उसको अपने कर्म अपने विश्वास अपनी श्रद्धा का फल मिलता है मैंने इसलिए इस सचाई को बताया कि हम लोग गृहस्थी गलत समझ या अज्ञान के कारण गुरुओं के पीछे न फिरे ।

मैं इस बार बाहर गया मैंने लोगों की बातें सुनी कि बाबा ! तू ने यह कर दिया वह कर दिया मेरे तो बाप को पता नही जो कुछ तुम लोगों को मिलता है यह तुम्हारा अपना विश्वास है एक आदमी मुझे मिला वह मुझे कहता था बाबा जी पेशाव की बीमारी थी मैंने बहुत इलाज करवाया लेकिन ठीक नहीं हुआ । आपकी फोटो मैंने पानी के गिलास में डालदी सुबह फोटो मिल गई मैं पानी पीगया और राजी होगया । अब बताओ मुझे स्वयं न पेशाब की बीमारी है तो मैं गृहस्थियों को कहना चाहता हूँ कि इस ख्याल से गुरुओं के पीछे मत दौड़ो कि तुम्हारी बीमारी दूर हो जाएगी जा तुमको लौटना नहीं पड़ेगा ऐसा करोगे तो तुम भूल में हो यह तो जो कुछ तुमने कर्म किए हुए हैं उसका फल तुमको मिलेगा किसी गुरू ने किसी महात्मा या किसी परमात्मा ने तुम्हारे जीवन को नहीं बदलना अगर बदलना है तो तुम्हारे

के लिए जपते हैं मगर मैंने दुनिया की आशाओं के लिए नाम नहीं जपा और मैं यहाँ पहुंचा वह मैंने बता दिया। मगर अभी मुझे होश आजाती है और फिर आप लोगों से बातें करने लग जाता हूं और यही बात राधास्वामी दयाल जी ने लिखी है कि मिलता क्या है ? सन्त नाम देकर जीव को करते क्या हैं और कहाँ पहुँचाते हैं ?

जेठ महीना जेठा भारी
जीव हृदय नैन तपा करारी
सन्त दयाल जीव हितकारी
भेद कहें भव निज कर भारी।

हम नाम क्यों जपते हैं ? हमारे अन्दर किसी बस्तु की तलाश है। हम कुछ न कुछ चाहते हैं। कोई दौलत चाहता है, कोई इज्जत चाहता है, कोई भगवान को चाहता है, कोई मुक्ति चाहता है भाव यह है कि कोई न कोई चाह हमारे अन्दर है। नाम हम क्यों जपते हैं ? क्योंकि जब तक इन्सान को किसी न किसी प्रकार की चाह है उसको सुख या शान्ति नहीं मिल सकती तो वह दौड़ता रहेगा। तो इस चाह को कौन बस्तुत समाप्त करती है। यह नाम इसको समाप्त करता है। राधास्वामी दयाल या दूसरे सन्तों को नाम जपने से क्या मिला यह मैं नहीं जानता। अगर यह समझो कि नाम जपने से सन्तों को बीमारियां नहीं आई, उनके पुत्र नहीं मरे या उनको घाटे नहीं पड़े यह फिजूल है राधास्वामी दयाल पिछले दो वर्ष इतने बीमार रहे कि जिसका कोई हिसाब नहीं। दूसरे गुरू जो नाम जपते थे उनका क्या हाल हुआ। नाम जपने से सांसारिक वस्तुयें नहीं मिलती। जब मैं कहता हूँ कि नाम से सांसारिक इच्छायें पूर्ण नहीं होती तो मेरा मतलब उस असली नाम से है यहाँ शरीर मन और रूह तीनों अवस्थाओं को समाप्त होकर शेष जात रह जाती है इस नाम से आवागमन छूट जाता है और परम शान्ति मिलती है क्योंकि वो नाम चौथे पद में रहता है यह असली नाम मन के चक्र से निकल करके इस चक्र को हमेशा के लिए मिटा देता है न रहे बाँस न बजे बाँसुरी यह ऐसी जगह पहुंचा देता है यहाँ हमारा आद है यहाँ से हम आये हैं वहाँ न

हो जाते हैं तो मिलों में चले जाते हैं वहां उनके कागज बन जाते हैं। तो काम तो जुलाहे ने अपने लिये किया किसी पर उसने एहसान नहीं किया मगर उसके काम का कितना फायदा हुआ। ऐसे ही मैंने काम किया। मुझे पता नहीं कि इस मेरे काम का दुनियाँ को क्या लाभ होगा मगर मैंने जो कुछ भी किया अपने लिए किया। आज यह शब्द निकला—

सदा नाम से लौ लगाया करो तुग
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम।

लोगों को एक सहारा देना कि नाम जपो भई, तर जाओगे यह एक और चीज है। मगर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि फकीरचन्द! तूने नाम से लौ लगाई और १९०५ से लेकर आज तक चलता रहा तू बता तुझको क्या मिला? मैं अगर आप लोगों को यह बात कहूं कि नाम से लौ लगाया करो तो मुझे सोचना चाहिये कि मुझे नाम से लौ लगने का क्या लाभ हुआ? अगर मुझे ही लाभ नहीं हुआ तो तुमको जो मैं उपदेश करता हूं मैं मूर्ख हूं। आज कल जितने सत्संगी हैं एक गुरू से नाम ले लेते हैं उनको कुछ मिले या न मिले बो औरों को घसीट घसीट कर बहाँ उनको नाम दिलाते रहते हैं यह दीवानापन नहीं तो और क्या है? मुझे नाम से लौ लगने से दिमाग के अन्दर एक ऐसी अवस्था आ जाती है यहाँ उसमें न नाम रहता है और न अनाम रहता है न मैं रहता हूँ न तू रहता है, न गुरू रहता है न राम न कृष्ण रहता है, न मालिक रहता है। मेरा क्या हो जाता है? मेरे दिमाग के अन्दर मेरे हैपने की अबस्था में ऐसी हालत छा जाती है जहां न मुझे ख्याल है कि मैं हूँ न मुझे ख्याल होता है कि मैं नहीं हूं, न गुरु का ख्याल न शब्द होता है, न प्रकाश होता है और न कोई और बस्तु होती है। एक अवस्था ऐसी हो जाती है यहां उसको तुम गुम हो जाता कहलो मगर कुछ है सही। मुझे नाम के रटने और जपने से यह मिला।

अब बताओ उस अबस्था को प्राप्त करने के लिए कौन तैयार है? तुम या हम लोग जो नाम जपते हैं दुनियाँ की आशाओं और दुनियाँ के कारोबार

प्रवचन

परम दयाल परमसन्त पं० फकीरचन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

३-११-८०

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम
सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम।
बसा कर गुरु मूर्ति मन के अन्दर
सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम
कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेजी
करुणा राग अपना सुनाया करो तुम
वो दाता दयाल अवश्य देंगे दर्शन
सदा ध्यान उसका लगाया करो तुम
भजन ध्यान से यह भटकने न पाये
फिर मन को निशदिन चिताया करो तुम
मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी
तड़प मन में दर्शन बढ़ाया करो तुम
मनो कामना होगी पूर्ण तुम्हारी
राधास्वामी का नाम गाया करो तुम

राधास्वामी !

मैं जब इस रास्ते में आया था तो मैंने प्रण किया था कि जो मेरा अनुभव होगा वो दुनिया को बता जाऊँगा। जुलाहा अपने पेट की खातिर ८-१० गज कपड़ा रोज बुनता है वो रुपया गज कमा लेता है करता वह अपने लिए है मगर उससे फायदा क्या होता है ? कुछ वह कमाता है फिर धोबी इस थान को धोता है, कुछ वह कमाता है, दर्जी कपड़े सीता है कुछ वह कमाता है, पहनने वाला सर्दी, गर्मी से बचता है फिर जब वह गलसड़ जाता है चीथड़े

उसने मछलियों से कहा कि तुम लोगों ने हमारी बात नहीं सुनी जिसके कारण तुम्हारी यह दशा हुई उन्होंने कहा अब हम सब तुम्हारी बात का विश्वास करती हैं। जो कहो हम सब लोग वही करेंगे। उसने कहा मैं तुम्हारे आगे-२ धार के प्रवाह को चीरती हुई पहाड़ की ओर चलती हूँ तुम लोग हमारे पीछे हो लो। सब मछलियों ने उसका अनुकरण किया। ज्यों २ वह आगे बढ़ती गई त्यों-२ जल का स्वाद व स्वच्छता बढ़ता गया। जिसको पान करके वह पुष्ट व शक्तिशाली होती चली गई। उनकी चाल दिन दूनी रात चौगुनी होती गई। वह सुगमता से पहाड़ पर पहुच गई। और पहले की तरह शान्तिमय जीवन व्यतीत करने के हेतु गुरु मछली का गुण गाने लगी।

तुम्हारे लेम्प में तेल, बत्ती भली भाँति है मगर शीशे में कजली लग जाने से वह कुशल प्रकाश देने में असमर्थ है तुम अपना हाथ तक नहीं देख सकते, तुमको पता नहीं कि क्या किया जाय गुरू के रूप में किसी ने कहा कि कजली धो दो। तुमने कजली को धो दिया शीशा चमकने लगा सारा कमरा प्रकाश से भर गया हाथ को कौन कहे तुम को हाथ के बाल तक दिखाई दे रहे है। तुम उस व्यक्ति के जिसने कजली धोने को कहा हो गये +

जिस प्रकार सूरज से किरणें गर्मी का प्रभाव लेकर निकलती है संसार में विद्यमान होती हैं उसी प्रकार स्वयं से सुरत शब्द व प्रकाश द्वारा दया का प्रभाव लेकर निकलती है और शरीर मे विद्यमान होती है। हम उसको विचार शक्ति से सम्बोधित करते हैं।

सुरत ने शब्द व प्रकाश द्वारा महाकाल देश (दयाल देश) से कारण देश में प्रवेश किया। वहाँ वह पूर्ण, सतोगुणी व अद्वैत है। वहाँ उस में दया, क्षमा, शील, सन्तोष व करुणा आदि के गुण हैं वहाँ प्रकाश ही प्रकाश है। वह अभय, अचिन्त व शान्तिमय है। महाकारण देश से कारण देश में प्रवेश करके उसने सूक्ष्म रूप, रंग व रेखा धारण किया और अपने होने का भान किया उसकी पूर्णता में त्रुटि आ गई प्रकाश व

(शेष पेज ५८ पर)

प्रकाश का अन्तर मेंट दिया, तुम हमारी बात सुनकर चकित हो गये। मगर यह अक्षरशः सत्य है इस रहस्य को जब किसी पूर्ण पुरुष की सेवा करके उसको प्रसन्न कर दोगे तो समय आने पर बिना कहे सुने सहज ही में समझ जाओगे। इसके बिना तुम समझ सकते हो या नहीं मालिक जानें। हमारी बात का समर्थन हजूर महाराज इस प्रकार करते हैं।

'शब्द ही मछली, शब्द ही नीर शब्द बखाने संत कबीर इत्यादि जो सार बचन में शब्द हेतु आया है तथा कबीर साहब व पलटू साहेब वो अन्य सन्तों ने लिखा है।

मैदान में गर्मी के कारण तपन है। इससे व्याकुल होकर वह ठंडक के हेतु तप कर रहा है। भाप को दया आई, मैदान की ओर वह आकृष्ट हुआ और बरस कर मैदान की तपन बुझाकर उसको हरा-भरा बना दिया। मैदान को छोड़ कर भाप पहाड़ पर चढ़ गया वर्फ बनकर उसको बिशाल बना दिया। और पहाड़ को चूमकर नदी का रूप धारण कर लिया। उसका जल स्वादिष्ट व स्वच्छ है उसमें मछलियाँ खेल करती हुई स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही हैं। पहाड़ से प्रभावित है तब तक जल में मछलियां शान्तिमय ज्यों-२ जल मैदान की ओर नीचे बढ़ रहा है, त्यों-२ उसके अपनी स्वच्छता व स्वाद को त्याग करता जाता है। और शान्ति भंग होती जाती है। चलते २ नदी का जल समुन्द्र में रा व गन्दा हो जाता है और मछलियाँ अशान्त होकर व्याकुल को ज्ञान नहीं होता कि इस दुख से छुटकारा पाने का क्या

उन मछलियों में से एक मछली ऐसी थी, जो पहले पहाड से समुन्द्र में आकर व्याकुल हो चुकी थी। और लौटकर पहाड़ पर शान्तिमय जीवन व्यतीत कर रही थी। उसने मछलियों से कहा था कि पहाड़ से खारे पानी के समुद्र में जाकर तुम अपनी शान्ती भग कर दोगी। मगर उन सबों ने उसकी बात नहीं मानी थी। वह मछली गुरू के रूप में दयालू थी। दया बस उनको दु.ख से छुड़ाने हेतु अपने ऊपर कष्ट सहकर उनका साथ कर लिया था।

विचार शक्ति

ले० कुबेर नाथ श्रीवास्तव

आवो हम परीक्षा लेवें कि स्थूल व सूक्ष्म में कौन शक्तिशाली व विशाल है। हम देखते हैं कि थल स्थूल और जल सूक्ष्म है। जल थल को गला देता है, जल को अग्नि सुखा देती है, अग्नि को वायु बुझा देती है, और वायु को आकाश ग्रस लेता है। इससे सिद्ध होता है कि थल से जल, जल से अग्नि, अग्नि से वायु और वायु से आकाश का मण्डल अधिक शक्तिशाली व विशाल है। इसको दृष्टिकोण में रखते हुए बताओ कि तुम्हारे शरीर में सबसे अधिक सूक्ष्म व बिशाल शक्तिशाली और विशाल कौनसी तत्व है यद्यपि वह तत्व सदैव तुम्हारे अंग संग है और प्रत्येक कार्य उसी के द्वारा करते हो बिना उसके तुम आँख तक नहीं खोल सकते। तद्यपि उसको बताने में असमर्थ हो। वह तत्व तुम्हारी विचार शक्ति है। अगर तुम्हारे विचार स्थूल मण्डल से सम्बन्ध रखते हैं तो निर्बल हैं। और अगर सूक्ष्म मण्डल में सम्बन्ध रखते हैं तो शक्तिशाली व विशाल हैं। निर्वल विचार लक्ष को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है और सबल विचार लक्ष को प्राप्त कर लेता है।

कहते हैं कि असत् से सत् प्रगट होता है जैसे समुद्र से भाप प्रगट होता है यह तो आत्मदर्शी व्यक्तियों के अनुभव की बात है। साधारण मनुष्य असत् का सत को प्रगट होते प्रत्यक्ष में नहीं देखता, मगर समुन्द्र से भाप का प्रगट होना तो सब देखते हैं। समुन्द्र व भाप दोनों एक ही तत्व है या दो दोनों में कौन सबल और कौन निर्बल है व कौन बड़ा व कौन छोटा है दोनों में क्या अन्तर है। इसका निर्णय मैं तो नहीं कर सकता, अगर तुम कर सकते हो तो करो।

आप जल से सूक्ष्म होने के कारण उससे अधिक शक्तिशाली और विशाल हो गया। वह अधिक सूक्ष्म होकर स्टीम बन गया और रेल तथा अन्य यन्त्रों को संचालित करने लगा। स्टीम ने सूक्ष्म बनकर शब्द का रूप धारण किया, जिससे बिजली व प्रकाश प्रगट हो गया। इस दृष्टिकोण से हमने समुन्द्र व